

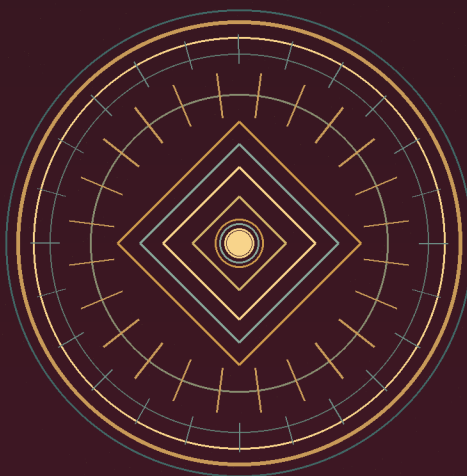
विदेह

गजेन्द्र ठाकुर समग्रक सम्पादकीय

खण्ड २९

भामती

अद्वैत वेदान्तक चतुःसूत्री समीक्षा



मूल संस्कृत : वाचस्पति मिश्र

मैथिली अनुवाद : गजेन्द्र ठाकुर

विस्तृत साहित्यिक आ दार्शनिक समीक्षा

सम्पादक आ समीक्षक

आशीष अनचिन्हार

ISSN 2229-547X | 2026

गजेन्द्र ठाकुर समग्रक सम्पादकीय

खण्ड २९

भामती

चतुःसूत्रीक दार्शनिक , साहित्यिक आ द्विभाषिक पाठ -समीक्षा

शंकरक ब्रह्मसूत्रभाष्यपर वाचस्पति मिश्रक टीकाक अध्ययन

मूल संस्कृत टीकाकार : वाचस्पति मिश्र

मैथिली अनुवाद आ सम्पादन : गजेन्द्र ठाकुर

सम्पादक आ समीक्षक : आशीष अनचिन्हार

विदेह — प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका

ISSN 2229-547X · २०२६

प्रकाशन-विवरण

सम्पादकीय शृंखला : गजेन्द्र ठाकुर समग्रक सम्पादकीय, खण्ड २९। समीक्ष्य ग्रन्थ : भामती (चतुःसूत्री), वाचस्पति मिश्रक शाङ्करभाष्य-टीका।

संलग्न मूल ग्रन्थमे संस्कृतसँ मैथिली अनुवाद, सम्पादन आ पुस्तक-विन्यासक श्रेय गजेन्द्र ठाकुरकेँ देल गेल अछि। एहि पुस्तकक समीक्षा-लेखन आशीष अनचिन्हारक सम्पादकीय नामसँ प्रकाशित अछि।

समीक्षित मूल फाइलक प्रकाशकीय विवरण : प्रथम संस्करण २००४; परिवर्धित संस्करण २०२६; ISBN 978-93-5943-682-1। एहि विवरणकेँ मूल संस्करणक कथन मानल गेल अछि; स्वतंत्र प्रकाशन-अभिलेखीय पुष्टि नहि।

© २०२६ प्रीति ठाकुर आ गजेन्द्र ठाकुर। समीक्षा आ सम्पादकीय प्रस्तुति विदेह प्रकाशन-सन्दर्भमे। मूल शास्त्रीय संस्कृत ग्रन्थक श्रेय वाचस्पति मिश्रकेँ सुरक्षित अछि।

एहि अध्ययनक मूल पाठाधार संलग्न मैथिली-अंग्रेजी द्विभाषिक DOCX अछि। मूल संस्कृतक स्वतंत्र आलोचनात्मक संस्करण उपलब्ध नहि रहने प्रतिशब्दीय संस्कृत-मिलानक निरपेक्ष दावा नहि कएल गेल अछि।

आलोचनाक पद्धति आ पाठाधार

समीक्ष्य पुस्तकक पहिल दू अध्यायमे पहिनेसँ उपलब्ध दार्शनिक आलोचना अछि, तेसर अध्यायमे चतुःसूत्रीक मैथिली अनुवाद अछि, चारिम अध्यायमे ग्रन्थसूची अछि; ओकर बाद अंग्रेजी रूपान्तरक समान विभाग छथि। एहि कारण समीक्षक पहिने मूल अनूदित पाठकेँ आधार बनबैत अछि, तकर बाद व्याख्यात्मक अध्यायसँ मिलान करैत अछि।

भारतीय शास्त्रार्थमे पूर्वपक्ष-सिद्धान्त, प्रमाण-प्रतिप्रमाण, अर्थलक्षण, व्याप्ति-अपवाद आ प्रत्यक्ष-श्रुतिविरोधक विवेचन आधारभूत रहत। पाश्चात्य व्याख्याशास्त्र आ भाषादर्शनसँ तुलना केवल विश्लेषणात्मक उपकरणक रूपमे होयत; ऐतिहासिक प्रभावक दावा नहि।

समीक्षामे उद्धृत लघु पाठ-साक्ष्य मूल DOCXक मैथिली अध्याय ३ अथवा शीर्ष पर उल्लिखित अन्य वास्तविक विभागसँ लेल गेल अछि। जहाँ इंग्लिश समतुल्यता देल गेल अछि, ओहि ठाम मूल अंग्रेजी विभागसँ सेहो मिलाओल गेल अछि।

पुस्तकसूचीक स्रोत समीक्षित DOCXक मुद्रित-ग्रन्थ विभाग अछि; केवल पुस्तकसभ राखल गेल अछि, वेबसाइट-सूची नहि। बिना बाहरी जाँचने ग्रन्थसूचीक कोनो असत्यापित विवरणकें अंतिम प्रमाणित तथ्य नहि मानल जाए।

अनुक्रम

१. समीक्ष्य ग्रन्थक स्वरूप : चतुःसूत्री आ ओकर सीमा.....	6
२. मूल लेखक, भाष्यकार, अनुवादक आ समीक्षकक श्रेय.....	7
३. पाठमुद्रण, संस्करण-विवरण आ शोधनीय विश्वसनीयता.....	8
४. भामती-विवरण सम्बन्ध : मिलान आ असमानता.....	9
५. मङ्गलाचरण : ब्रह्माण्डीय बिम्ब आ लोकभाषाक सौन्दर्य.....	10
६. आत्मजिज्ञासाक निषेध : विरोधी मतक तर्क.....	11
७. प्रत्यभिज्ञा : बदलैत देह आ 'हम'क निरन्तरता.....	12
८. 'अहाँ' आ 'हम' : विषय-विषयीक दार्शनिक दूरी.....	13
९. अध्यासक लक्षण : पूर्वदृष्ट, स्मृतिरूप आ परत्र.....	14
१०. ख्यातिवाद : भ्रमक प्रतिद्वन्द्वी व्याख्या.....	15
११. अनिर्वचनीयता : द्वन्द्वातीत कि परिभाषासँ परे?.....	16
१२. आत्माक स्वयंप्रकाशता आ अनवस्थाक दोष.....	17
१३. अविषय आत्मापर आरोप : आकाशक दृष्टान्त.....	18
१४. अविद्या आ लौकिक व्यवहार : मिथ्यात्वक व्यावहारिक शक्ति.....	19
१५. अथातो ब्रह्मजिज्ञासा : 'अथ'क चारि सम्भावना.....	20
१६. साधनचतुष्टय : जिज्ञासाक अधिकारीक निर्माण.....	21
१७. जन्माद्यस्य यतः : तटस्थलक्षण आ कार्य-कारण.....	22
१८. शास्त्रयोनित्वात् : ज्ञानक स्रोत आ शास्त्रक कारण.....	23
१९. तत्तु समन्वयात् : वेदान्तवाक्यक एकवाक्यता.....	24
२०. ज्ञानक स्वतःप्रामाण्य : वस्तुतन्त्र आ पुरुषतन्त्र.....	25
२१. मोक्षक चारि कार्यता : उत्पाद्य, विकार्य, संस्कार्य, आप्य.....	26
२२. कूटस्थ नित्यता आ भेदाभेदक परीक्षा.....	27
२३. सिद्धवस्तुवाक्यक फल : शास्त्रीय भाषा-दर्शन.....	28
२४. नञ् निषेध आ पर्युदासक व्यावहारिक तर्क.....	29

२५. जीवन्मुक्ति : ज्ञानक बाद जीवनक अवस्था.....	30
२६. मैथिली अनुवादक वाक्यगठन : पारिभाषिकता आ देशज प्रयोग.....	31
२७. अध्याय १ आ २क स्वतन्त्र समीक्षा : पाठक लेल सहायता कि पूर्वनिर्णय?.....	32
२८. मैथिली-अंग्रेजी रूपान्तर : शब्द-साम्य आ अर्थ-संरचना.....	33
२९. परिशिष्टक काव्यात्मक अङ्ग : रूपक प्रमाणकेँ कोना सहारा दैत अछि.....	34
३०. मिथिलाक समानान्तर बौद्धिक इतिहासमे स्थान.....	35
३१. ग्रन्थसूची : प्रामाणिक स्रोत आ अप्रामाणित विवरणक अन्तर.....	36
३२. समेकित निर्णय : सम्भावना, सीमा आ अगिला संशोधन.....	37
मैथिली-अंग्रेजी प्रमाण-सारणी.....	38
द्विभाषिक पारिभाषिक शब्दावली.....	45
समीक्षा-निष्कर्षक सारणी.....	48
ग्रन्थसूची : पुस्तक मात्र.....	50

१. समीक्ष्य ग्रन्थक स्वरूप : चतुःसूत्री आ ओकर सीमा

एहि पुस्तकक केन्द्र सम्पूर्ण ब्रह्मसूत्रपर लिखल विशाल भाष्य नहि, अपितु शाङ्करभाष्यक आरम्भिक अध्यास-विवेचन आ पहिल चारि सूत्रपर वाचस्पति मिश्रक व्याख्या अछि। संलग्न संस्करण अपन नामक सङ्ग ‘चतुःसूत्री’ जोड़ैत अछि, आ मैथिली अनुवादक अन्तमे स्पष्ट समाप्ति-सूचना दैत अछि। एहि सीमाक स्पष्टता समीक्षाक पहिल आवश्यकता अछि: चतुःसूत्रीक सिद्धान्त बीज आ सम्पूर्ण भामती-परम्पराक विकसित निष्कर्ष एक नहि अछि।

ई पोथीमे चारि मुख्य अध्याय छथि। आरम्भक दू अध्याय संस्कृत-मैथिली प्रस्तुति पर पहिनेसँ लिखल विश्लेषण, तेसर अध्याय विस्तृत मैथिली अनुवाद आ चारिम अध्याय ग्रन्थसूची अछि। तकर बाद ई चारू विभाग अंग्रेजीमे फेर आएल अछि। अतएव एकरा केवल संस्कृतसँ मैथिली अनूदित मूलग्रन्थ मानब कम होयत; ई अनुवाद, व्याख्या, संदर्भ-साधन आ अंग्रेजी रूपान्तरणक संयुक्त सम्पादकीय पुस्तक अछि। प्रत्येक स्तरक लेखकीय दायित्व अलग जाँचब आवश्यक अछि।

एहि मिश्रित संरचनाक लाभ पाठकक प्रवेशमे अछि, मुदा खतरा ई जे पहिने सँ लिखल प्रशंसात्मक समीक्षा अनुवादक स्वयंपूर्ण प्रमाण बनि सकैत अछि। पाठालोचक पहिने स्वतन्त्र रूपेँ परिशिष्टक वाक्य आ तर्कक्रम पढ़त, तकर बाद प्रथम-द्वितीय अध्यायक निर्णयक परीक्षा करत। ई अध्ययन ताहि उलटल प्रमाणक्रमकेँ ठीक करबाक प्रयत्न अछि।

मूल पाठ-साक्ष्य

““अहाँ” आ “हम” ई दुइ अवधारणाक क्षेत्र—विषय आ विषयी—अपन-अपन स्वभावमे अन्हार आ इजोत जकाँ एक-दोसरक विपरीत अछि। जखन ई सिद्ध अछि जे एक दोसरक स्वरूप बुद्धिगम्य रूपेँ नहि भऽ सकैत...”

तदनु रूप अंग्रेजी पाठक आरम्भ : The fields of the two notions, “you” and “I”—the object and the subject—are, by their very natures, opposed to one another like darkness and light. When it...

२. मूल लेखक, भाष्यकार, अनुवादक आ समीक्षकक श्रेय

ब्रह्मसूत्रक सूत्रकार, शाङ्करभाष्यक रचयिता, भामतीक टीकाकार आ आधुनिक अनुवादक चारि भिन्न बौद्धिक भूमिका निभबैत छथि। समीक्ष्य संस्करण ‘मूल संस्कृत: वाचस्पति मिश्र’ लिखि भामतीक लेखकीय श्रेय स्पष्ट करैत अछि; मुदा सूत्र आ भाष्यक उद्धरण सेहो एहिमे वाचस्पतिक टीकासँ अलग चिह्नित रहबाक चाही। ग्रन्थक इतिहास बुझबाक लेल शब्दक प्रवाहसँ बेसी ओकर वक्ता महत्त्वपूर्ण अछि।

‘पूर्वपक्षी कहैत अछि’, ‘भाष्यकार कहैत छथि’ आ ‘हमर उत्तर’ सन वाक्यसभ बहुस्तरीय संवाद रचैत अछि। एतय सर्वनाम बदललासँ तर्कक दायित्व बदलि सकैत अछि: जे आक्षेप विरोधी मतक अछि से लेखकक सिद्धान्त नहि; जे भाष्यक मूल स्वर अछि से टीकाकारक स्वनिर्मित प्रतिपादन नहि। मैथिली अनुवादक मूल्य तखन बेसी स्पष्ट होइत अछि जखन ई सीमा सुरक्षित रहैत अछि।

समीक्षा-परम्पराक नैतिक प्रश्न सेहो इएह अछि। भारतीय दर्शनक मौखिक-शास्त्रार्थपरम्परामे विरोधी मत केँ पहिने ओकर बलवान रूपमे राखल जाइत अछि। भामतीक एहि उदाहरणमे पाठक केवल अद्वैतक अन्तिम निष्कर्ष नहि, तर्क-विन्यासक विधि सेहो सीखैत अछि। एहि कारण श्रेय-विभाजन ग्रन्थसूचीक विषय मात्र नहि, दर्शन-वाचनक आवश्यकता अछि।

मूल पाठ-साक्ष्य

““दुइ अवधारणाक क्षेत्र...” सँ “केवल मिथ्या अध्यासे भऽ सकैत अछि” धरि शङ्काक कथन अछि। “तैयो” सँ उत्तर आरम्भ होइत अछि। उत्तरक “तैयो”क अपेक्षामे शङ्कावाक्यमे “यद्यपि” शब्द जोड़ि...”

तदनु रूप अंग्रेजी पाठक आरम्भ : From “The fields of the two notions...” through “can in truth occur only as false superimposition” is the statement of the objection. The answer begins with...

३. पाठमुद्रण, संस्करण-विवरण आ शोधनीय विश्वसनीयता

संलग्न पुस्तक प्रथम संस्करण २००४ आ परिवर्धित संस्करण २०२६ बतबैत अछि। ISBN सेहो देल अछि। ई सभ तथ्य उपलब्ध संस्करणक अपन प्रकाशकीय कथन छथि; स्वतंत्र पुस्तकालयीय अथवा प्रकाशक-अभिलेखीय सत्यापन एहि आलोचनाक कार्याधारमे नहि अछि। शोधक उद्घरण दैत काल एहि तथ्यकें संस्करणक कथनक रूपमे लिखथि, बाहरी ऐतिहासिक प्रमाणक रूपमे नहि।

मूल पुस्तकक ग्रन्थसूचीमे पुरान मुद्रण, संयुक्त टीका-संस्करण, आधुनिक अनुवाद आ दुर्लभ कृतिसभ एकठाम संगृहीत छथि। पुस्तक स्वयं किछु दुर्लभ ग्रन्थक विवरण अनिश्चित मानैत अछि। ई सत्यापन-विभाजन सम्पादकीय रूपसँ उपयोगी अछि। मुदा ‘उपयोगिता’ लिखल रहबाक अर्थ ई नहि जे सभ पाँतिक संस्करण-अनुक्रम अपनहि प्रमाणित भऽ गेल। किछु शीर्षकक लिप्यन्तरण, प्रकाशन-वर्ष आ सम्पादकक नाम पुस्तकालय-कैटलॉगसँ जाँचेबाक आवश्यकता रहैत अछि।

मूल संस्कृतक अलग प्रमाणित पाठ, पाठान्तर-सारिणी आ पाण्डुलिपि-आधार एहि संलग्न सामग्रीमे स्वतंत्र रूपेँ नहि भेटैत अछि। ताहि लेल एहि समीक्षामे मैथिली वाक्यक ‘मूल संस्कृतसँ पूर्ण समानता’क निरपेक्ष दावा नहि अछि। प्रस्तुत परीक्षण दूनू उपलब्ध भाषामे तर्कगत अर्थ, पद-चयन, विरोधी मतक संरक्षण आ अन्तिम व्याख्याक निरन्तरतापर आधारित अछि।

मूल पाठ-साक्ष्य

“१. मिश्र, वाचस्पति। भामती (चतुःसूत्री): शंकरक ब्रह्मसूत्रभाष्यपर टीका। मूल संस्कृतसँ शुद्ध मैथिली अनुवाद, सम्पादन आ पुस्तक-विन्यास: गजेन्द्र ठाकुर। विदेह — प्रथम मैथिली...”

४. भामती-विवरण सम्बन्ध : मिलान आ असमानता

समीक्ष्य पुस्तक भामती-प्रस्थान आ विवरण-प्रस्थानक बीच अविद्याक आश्रय, जीवभाव आ चेतना सम्बन्धी मतभेदक संकेत दैत अछि। एहि तुलनाक बौद्धिक महत्त्व अछि, कारण अद्वैत एतय एकहि स्थिर सूत्रक घोषणाक नाम नहि; विवेचनक भीतर विभिन्न उप-परम्परा विकसित होइत अछि। मुदा चतुःसूत्रीमे जे बीज रूप देखाइत अछि, ओकर बादक व्यवस्थित व्याख्या एतय सिद्ध मानि लेब उचित नहि।

पुस्तकक पहिल अध्याय अविद्याक जीवाश्रयत्वक व्याख्या दैत अछि। एतय तात्त्विक कठिनाई ई जे अविद्यासँ प्रभावित जीव केँ अविद्याक आश्रय मानल जाए तँ आश्रय आ आश्रितक पारस्परिकता पर प्रश्न उठैत अछि। एहि प्रश्नक समाधान बादक टीका-परम्परामे बहुविध रूपें खोजल गेल; उपलब्ध चतुःसूत्री-कथनक सीमा पर टिकि एकर आलोचना करू।

विवरण-परम्पराकेँ केवल भामतीक विपरीत, आ भामतीकेँ केवल विवरणक पूर्वरूप कहब सिद्धान्तगत इतिहासकेँ सपाट करैत अछि। पद्मपादक पञ्चपादिका, प्रकाशात्मयतिक विवरण, अमलानन्दक कल्पतरु आ अप्पय दीक्षितक परिमलसँ तुलनात्मक प्रमाण एतय सहायक होएत, मुदा तिनक स्वतंत्र पाठ नहि पढ़ल गेल अछि। से दायरा स्पष्ट करब ई समीक्षाक दायित्व अछि।

मूल पाठ-साक्ष्य

“चतुःसूत्री-अंशमे भामती-प्रस्थानक अनेक बीज-सिद्धान्त उपस्थित अछि, आ अनुवाद ओकरा उजागर होमय दैत अछि: (क) मङ्गलश्लोकक “दुइ प्रकारक अनिर्वचनीय अविद्या” आ आगाँ “द्विविध — आवरण आ...””

५. मङ्गलाचरण : ब्रह्माण्डीय बिम्ब आ लोकभाषाक सौन्दर्य

समीक्ष्य मैथिली परिशिष्टमे ब्रह्मक महिमा कहल जाएत अछि—‘वेद हुनक श्वास छथि, पाँचो महाभूत हुनक दृष्टि छथि, चल-अचल जगत हुनक मुस्की अछि’। ‘मुस्की’क चयन अपन भाषा-संसारक निकटता दैत अछि; ब्रह्माण्डीय कथन आ सहज मानवीय अनुभूति एकहि वाक्यमे मिलैत अछि। ई रूपान्तर शास्त्रीय भार कम करैत अर्थ निस्तेज नहि करैत; कारण उपमा तत्काल तत्त्वमीमांसक छविक रूप लैत अछि।

मुदा सौन्दर्य मात्रसँ तत्त्वार्थ निश्चित नहि होइत अछि। ‘दुइ प्रकारक अनिर्वचनीय अविद्या केँ मन्त्री बना कऽ’ सन अलंकारमे ईश्वर, अविद्या आ जगतसृष्टिक सम्बन्ध नियत कारणत्वक रूपमे पढ़ल जाए कि स्तुतिपरक काव्यरूपमे—ई प्रश्न उठैत अछि। मङ्गलश्लोकक भक्ति-वाणीकेँ उत्तरक सिद्धान्तक एकमात्र प्रमाण मानब त्रुटि होएत।

सात मङ्गलवाक्यक क्रममे शास्त्रीय आदर, ग्रन्थकारक आत्मस्थितिक विनय आ व्याख्या आरम्भक संकेत अछि। एतय पाठक देखैत छथि जे तर्कप्रधान ग्रन्थ लोक-काव्यात्मक भाषाक शत्रु नहि अछि। दार्शनिक समीक्षा एकहि संग भाव-संरचना आ प्रमाण-संरचनाक भेद सुरक्षित रखैत अछि।

मूल पाठ-साक्ष्य

“वेद हुनक श्वास छथि, पाँचो महाभूत हुनक दृष्टि छथि, चल-अचल जगत हुनक मुस्की अछि आ हुनक निद्रा महाप्रलय अछि।”

तदनु रूप अंग्रेजी पाठक आरम्भ : The Vedas are His breath, the five great elements are His sight, the moving and unmoving world is His smile, and His sleep is the great dissolution.

६. आत्मजिज्ञासाक निषेध : विरोधी मतक तर्क

अध्यासविवेचनक पहिल प्रश्न अछि—जाहि आत्माक अनुभव पहिनेसँ ‘हम’ रूपेँ अछि ओकर अतिरिक्त जिज्ञासा किएक? विरोधी पक्ष निर्विवाद अनुभूति आ प्रयोजनहीन प्रश्नक दुई मानदण्ड ठाढ़ करैत अछि। तेज इजोतमे देखल घट आ कौआक दाँतक दृष्टान्त दू भिन्न कारण प्रस्तुत करैत छथि: पहिल मे संशयक अभाव, दोसर मे अर्थपूर्ण फलनिक अभाव।

एकर बौद्धिक बल ई अछि जे दार्शनिक जिज्ञासा स्वयं अपन उपयोगिता प्रमाणित करय। वेदान्तक उत्तर आत्मा-सम्बन्धी व्यवहारिक आत्मचेतना आ निरुपाधिक आत्मज्ञानमे भेद कऽ दैत अछि। हमर दृष्टिसँ निर्णायक क्षण ‘हम छी’ आ ‘हम की छी’क बीच अन्तर अछि। पहिल कथन अनुभवगत सुनिश्चितता देखबैत अछि, दोसर तत्त्वमीमांसक विवेचन माँगैत अछि।

एहि तर्कक्रममे पूर्वपक्षीकेँ मूर्ख वा अज्ञानी कहि टारल नहि गेल अछि। विरोधी मतक सबसँ बलवान आधार स्वीकृत भेला परहि विवेकक सम्भावना खुलैत अछि। मैथिली पाठक लेल ई शैली शास्त्रार्थक शिक्षणप्रणालीक बहुमूल्य नमूना अछि।

मूल पाठ-साक्ष्य

“एखन, जाहि वस्तुक विषयमे कोनो सन्देह नहि अछि अथवा जकर ज्ञानसँ कोनो प्रयोजन नहि सिद्ध होइत अछि, ओ विवेकी जिज्ञासुक जानबाक इच्छाक विषय नहि भऽ सकैत अछि।
उदाहरणार्थ, तेज इजोतमे...”

तदनु रूप अंग्रेजी पाठक आरम्भ : Now, an object about which there is no doubt, or knowledge of which serves no purpose, cannot become an object that a discriminating inquirer desires to...

७. प्रत्यभिज्ञा : बदलैत देह आ 'हम'क निरन्तरता

मूल अनुवाद बाल्यकाल, यौवन आ वृद्धावस्थाक देहगत परिवर्तनसँ 'हम'क निरन्तरताक समस्या उठबैत अछि। फूलसभकेँ जोड़निहार सूतक दृष्टान्त अनुभूत रूपान्तरक मध्य एकटा स्थायित्वक सम्भावना देखबैत अछि। एहि दृष्टान्तक शक्ति स्पष्ट अछि, मुदा एकर प्रमाणगत सीमा सेहो अछि: निरन्तर स्मृति वा आत्म-संज्ञानसँ स्थायी द्रव्यक निष्कर्ष कोन अतिरिक्त मान्यतासँ निकलैत अछि? एतय तर्कक सेतु चाही।

सपना मे देह-देह धारण कऽ जागलापर अपन मनुष्य-देह बूझबाक उदाहरण अनुभवक स्तरभेद परिचित करबैत अछि। सपनाक देहक बाध आ जाग्रत् अनुभूतिक निरन्तरतासँ आत्माक अविनाशी स्वरूप तकक यात्रा स्वतः सम्पन्न नहि होइत अछि। समीक्षा एहि अंतरालकेँ चिन्हैत अछि, नहि कि दृष्टान्तक बौद्धिक आकर्षणकेँ नकारैत अछि।

‘हम ओही छी’क निर्णय जखन देह-भेदक बावजूद अबैत अछि, तखन कतेक भाग स्मरण, कतेक आत्मबोध आ कतेक भाषिक एकताक फल अछि, एहि तीनूकेँ भिन्न कऽ देखबाक चाही। मूल ग्रन्थ स्वयं साधारण लोकक अनुभव आ तत्त्वविचारक निष्कर्षक भेद उठबैत अछि; ई आन्तरिक आलोचनाक सुदृढ़ आधार अछि।

मूल पाठ-साक्ष्य

“यौवनक देह आ वृद्धावस्थाक देहक बीच वास्तवमे प्रत्यभिज्ञाक किंचितो चिह्न नहि अछि, जाहिसँ दुनूक एकत्व निश्चित कएल जा सकय। अतः जे परिवर्तनशील वस्तुसभमे निरन्तर एकरूप रहैत अछि, ओ...”

तदनुरूप अंग्रेजी पाठक आरम्भ : There is in fact not the slightest mark of recognition between the youthful body and the aged body by which their identity could be ascertained. Therefore...

८. 'अहाँ' आ 'हम' : विषय-विषयीक दार्शनिक दूरी

अध्यासभाष्यक आरम्भिक वाक्यमे 'अहाँ' आ 'हम'क क्षेत्र अन्हार-इजोत-जकाँ विपरीत कहल गेल अछि। अंग्रेजी पाठ एकरा 'you' and 'I' आ 'object' and 'subject' रूपेँ व्यक्त करैत अछि। द्विभाषिक दृष्टिसँ ई स्थान अत्यन्त संवेदनशील अछि: सामान्य वार्ताक 'अहाँ' कोना ज्ञान-विषयक प्रतिनिधि बनि गेल, आ 'हम' कोना विषयी रहल? अनुवादमे एहि असामान्य चयनक टीकात्मक स्पष्टीकरण जरूरी अछि।

मूल पाठ स्वयं कहैत अछि जे 'ई' आ 'हम' कहबाक अपेक्षा 'अहाँ' आ 'हम' अधिक विपरीत रूपेँ लेल गेल अछि। तात्पर्य केवल सर्वनामक शब्दार्थ नहि, विषय-विषयीक अदला-बदलीक असम्भाव्यता अछि। एतय भाषा-दर्शन आ आत्ममीमांसा एक-दोसराक सहायक बनैत छथि।

मुदा 'विषय'क अर्थ साधारणतः बाह्य वस्तु मात्र नहि, ज्ञानक अवधारणाक विषय सेहो होइत अछि। जँ ई सूक्ष्मता छुटि जाए तँ अध्यासकेँ मात्र दुई भौतिक वस्तुक मिश्रण मानि लेल जाएत। मूल अनुवादक सफलताक कसौटी ई अछि जे जड़-बुद्धि, इन्द्रिय आ देहसँ चैतन्य आत्माक भिन्नता सिर्फ शब्दमे नहि, तर्कक पाँतिमे सेहो देखाओल जाए।

मूल पाठ-साक्ष्य

““अहाँ” आ “हम” ई दुइ अवधारणाक क्षेत्र—विषय आ विषयी—अपन-अपन स्वभावमे अन्हार आ इजोत जकाँ एक-दोसरक विपरीत अछि। जखन ई सिद्ध अछि जे एक दोसरक स्वरूप बुद्धिगम्य रूपेँ नहि भऽ सकैत...”

तदनुरूप अंग्रेजी पाठक आरम्भ : The fields of the two notions, “you” and “I”—the object and the subject—are, by their very natures, opposed to one another like darkness and light. When it...

१. अध्यासक लक्षण : पूर्वदृष्ट, स्मृतिरूप आ परत्र

‘पहिने देखल वस्तुक स्मृतिसदृश स्वरूपमे आन ठाम प्रकट होएब’—ई अध्यासक प्रारम्भिक लक्षण अछि। एतय तीन पदक कसौटी ठाढ़ होइत अछि: पूर्वदृष्ट वस्तु, स्मृतिसदृश अनुभूति आ भिन्न अधिष्ठान। वाचस्पतिक विवेचन एहि तीनूकेँ स्पष्ट करैत सामान्य प्रत्यभिज्ञासँ भ्रमक भेद खिचैत अछि।

कालाक्षी गाएमे स्वस्तिमती गायक गोत्वक ज्ञान अथवा एक नगरमे पहिने देखल व्यक्तिक दोसर नगरमे पुनः पहचान—एहि उदाहरणसभसँ अतिव्याप्तिक प्रश्न उठैत अछि। पूर्वज्ञानक पुनरावृत्ति मात्र अध्यास नहि; गलत अधिष्ठानमे गलत आरोपक शर्त अनिवार्य अछि। ताहि कारण परिभाषामे ‘परत्र’ शब्द मात्र अलंकार नहि, निर्णायक तार्किक मर्यादा अछि।

एहि वादक साहित्यिक सौन्दर्य वस्तुतः परिभाषाक नाटकीय अनुशासनमे अछि। पाठक वाक्य पढ़ैत-पढ़ैत देखैत छथि जे एकटा अपवाद सामने अयला पर परिभाषा केहन रूपेँ बदलेबाक पड़ैत अछि। ई न्यायीय समीक्षा-प्रणालीसँ तुलनीय अछि, मुदा अद्वैतक आत्म-अनात्म संरचनासँ ओकर पृथक संदर्भ सेहो रहैत अछि।

मूल पाठ-साक्ष्य

“मानि लिअ। “पहिने देखल वस्तुक आन ठाम प्रकट होएब” ई परिभाषा अतिव्याप्त अछि। कारण कालाक्षी नामक गाएमे पहिने स्वस्तिमती गाएमे देखल गोत्वक प्रतीति होइत अछि। तहिना पाटलिपुत्रमे...”

तदनुरूप अंग्रेजी पाठक आरम्भ : Granted. The definition “the appearance elsewhere of something previously seen” is too broad, because in the cow named Kalakshi there is the perception of...

१०. ख्यातिवाद : भ्रमक प्रतिद्वन्द्वी व्याख्या

भ्रम-ज्ञान की अछि—एहि प्रश्नपर पुस्तक भिन्न ख्यातिवादक विवाद उठबैत अछि। नैयायिक अन्यथाख्याति, बौद्ध विचार-धारा आ अद्वैतक अनिर्वचनीयख्याति एकहि भ्रम-घटनाक अलग दार्शनिक निदान दैत छथि। अनुवादक उत्तरदायित्व ई अछि जे प्रतिद्वन्द्वी मतक कारण तथा निष्कर्ष सुरक्षित राखथि, नहि कि सभकेँ एकटा सहज ‘भूल’ शब्दमे समेटि देथि।

मृगतृष्णामे जल-बोधक उदाहरण रोचक अछि, कारण अनुभवक क्षणमे जलक आभास सचेतन अछि, मुदा जलक वास्तविक उपस्थिति अनिश्चित वा बाधित अछि। एतय ‘जे देखायल’ आ ‘जे अछि’क बीच प्रमाणगत फाँक तर्कक केन्द्र अछि। वस्तुक अस्तित्व, ज्ञानक घटना आ मिथ्यात्वक दाबी तीन अलग स्तरोपर जाँचय पड़ैत अछि।

पाठमे विरोधी व्याख्यापर व्यङ्ग्यात्मक वाणी भेटैत अछि, मुदा व्यङ्ग्य अपने आपमे प्रमाण नहि। अनिर्वचनीयख्यातिक सफलता विरोधी मतक दुर्बलता देखाएबासँ आगाँ बढ़ि अपन ‘न सत्, न असत्’ विधानक तार्किक अर्थ स्पष्ट कएलापर निर्भर अछि।

मूल पाठ-साक्ष्य

“ई प्रश्नो उचित नहि जे मृगतृष्णाक जल असत्य अछि, मुदा मृगतृष्णा अपन स्वरूपमे पारमार्थिक रूपेँ सत्य अछि; जबकि देह, इन्द्रिय आदि अपन स्वरूपमे सेहो असत्य छथि, अतः अनुभवक विषय भऽ...”

तदनु रूप अंग्रेजी पाठक आरम्भ : Nor is it proper to ask: the water of a mirage is unreal, but the mirage itself is ultimately real in its own form; whereas the body, senses, and so forth...

११. अनिर्वचनीयता : द्वन्द्वातीत कि परिभाषासँ परे?

मृगतृष्णाक जल ‘ने सत्य, ने असत्य’ कहबाक उद्देश्य जँ केवल विरोधाभासक नाम बदलि देब हो, तँ सिद्धान्त कमजोर होएत। भामतीक आग्रह भिन्न अछि: वस्तुक अनुभवजन्य उपलब्धता आ ज्ञानबाधा दुनूकेँ एक संग चिन्हल जाए। व्यावहारिक स्तरपर अनुभव घटित भेल, पारमार्थिक स्तरपर ओकर विषयरूपेँ स्थायित्व नहि टिकैत अछि।

एतय ‘अनिर्वचनीय’ शब्दकेँ अस्पष्टताक बहाना बनाओल नहि जा सकैत। कोन प्रमाण अनुभवकेँ सिद्ध करैत अछि, कोन बाधक प्रमाण ओकर पूर्व दाबी बदलैत अछि, आ दुनूक क्षेत्र एकहने अछि कि नहि—ई स्पष्ट करबाक पड़ैत अछि। परिशिष्टक दीर्घ विवेचन एहि समस्या प्रति सचेत अछि; ताहि सजगताकेँ समीक्षामे विशेष महत्त्व देल गेल अछि।

एकर दार्शनिक दुर्बलता संभावित रहैत अछि जँ व्यवहारिक आ पारमार्थिकक अन्तर बिना मानदण्डक कहि देल जाए। एहि विरोधकेँ अद्वैतक अपने सिद्धान्तक भीतर उठबैत रहब भामतीक पाठक संग न्याय करब अछि।

मूल पाठ-साक्ष्य

“ई प्रश्नो उचित नहि जे मृगतृष्णाक जल असत्य अछि, मुदा मृगतृष्णा अपन स्वरूपमे पारमार्थिक रूपेँ सत्य अछि; जबकि देह, इन्द्रिय आदि अपन स्वरूपमे सेहो असत्य छथि, अतः अनुभवक विषय भऽ...”

तदनु रूप अंग्रेजी पाठक आरम्भ : Nor is it proper to ask: the water of a mirage is unreal, but the mirage itself is ultimately real in its own form; whereas the body, senses, and so forth...

१२. आत्माक स्वयंप्रकाशता आ अनवस्थाक दोष

जँ आत्माक जानबाक लेल दोसर प्रकाशक ज्ञान चाही, तखन ओ दोसर ज्ञानकेँ जानबाक लेल तेसर ज्ञान अपेक्षित होयत—ई अनवस्थाक प्रश्न अछि। पुस्तक ‘अन्हर अन्हरक हाथ पकड़ि प्रत्येक डेगपर खसैत अछि’ सन बिम्बसँ एहन निर्भरता बुझबैत अछि। लोकबिम्ब एतय कठिन शास्त्रीय दुष्चक्रकेँ जिज्ञासुक समझमे अनैत अछि।

स्वयंप्रकाशता मानब आ आत्मा कोनो वस्तु-जकाँ स्वयमेव प्रत्यक्ष अछि मानब समान नहि। आत्मा विषय बनलासँ विषय-विषयी भेद पर फेर प्रश्न उठैत अछि। अनुवादमे ‘प्रकाश’, ‘ज्ञप्ति’, ‘अनुभव’क बहुअर्थिता पर ध्यान देबाक आवश्यकता अछि; नहि तँ आलोकक रूपक भौतिक प्रकाशक सिद्धान्त बुझाए लागत।

ज्ञानक स्वप्रामाण्य आ ज्ञाताक स्वप्रकाशता सेहो एकहि दावा नहि अछि। पहिल ज्ञानक सत्यता/प्रमाणात्मकता सम्बन्धी, दोसर अनुभवक आत्मसाक्षित्व सम्बन्धी प्रश्न अछि। पुस्तकक भिन्न अनुच्छेद ई दूनू चर्चा अनैत अछि; समीक्षामे तिनका अलग राखब बौद्धिक सटीकताक शर्त अछि।

मूल पाठ-साक्ष्य

“...हम न्याय-कणिकामे दऽ चुकल छी। हमर मतमे ज्ञानक प्रामाण्य ओकर विषयसँ नियत सम्बन्धक कारण नहि, बल्कि ज्ञानबोध करएबाक अपन सामर्थ्यक कारण स्वतः अछि; अतः एतय विस्तार नहि कएल जा...”

तदनुरूप अंग्रेजी पाठक आरम्भ : ...by me in the Nyayakanika. In my view, the validity of cognition is intrinsic because of its own capacity to make known, not because of a fixed relation to...

१३. अविषय आत्मापर आरोप : आकाशक दृष्टान्त

आत्मा जँ चैतन्य विषयी अछि आ साधारण विषय नहि, तँ ताहिपर देहादिक आरोप कोना सम्भव? एहि कठिन प्रश्नक उत्तरमे परिशिष्ट आकाशपर नीला, मलिन अथवा उलटल कटोरा-जकाँ आकारक आरोपक दृष्टान्त दैत अछि। लक्ष्य ई दिखाएब अछि जे पूर्ण प्रत्यक्ष वस्तु-जकाँ ज्ञान आवश्यक नहियो हो, तखनहुँ आरोप सम्भव कहल जाएत।

दृष्टान्तक सीमा स्पष्ट अछि: आकाशक स्थानिक अनुभूति आ आत्माक गैर-वस्तुगत स्वरूप एकहि प्रकारक नहि। केवल उपमा साम्य देइत अछि, निश्चयात्मक प्रमाण नहि। ‘प्रौढवादक रीति’सँ प्रस्तुत दोसर उत्तरक उपयोगी पाठ ई अछि जे लेखक प्रथम उपायसँ भिन्न प्रकारक आपत्ति पर विचार करैत छथि।

मूल मैथिलीमे ‘इन्द्रनील मणिसँ बनल विशाल उलटल कटोरा’ अत्यन्त दृश्यात्मक अछि। दार्शनिक गद्यक ई सौन्दर्य बचबाक संग दृष्टान्तक साध्य साफ राखबाक चाही—एतय प्रमाण आ चित्रकारिता एक-दोसराक विकल्प नहि, सहयोगी छथि।

मूल पाठ-साक्ष्य

““फेर, केना” इत्यादि शब्दमे चैतन्य आत्मापर अध्यासक पुनः आपत्ति कएल गेल अछि।

अभिप्राय ई अछि—ई चैतन्य आत्मा प्रकाशित अछि वा नहि? जँ प्रकाशित नहि अछि, तँ ताहिपर विषय आ ओकर...”

तदनु रूप अंग्रेजी पाठक आरम्भ : In the words “Again, how...” and so forth, an objection is once more raised against superimposition upon the conscious Self. The intention is this: is the...

१४. अविद्या आ लौकिक व्यवहार : मिथ्यात्वक व्यावहारिक शक्ति

परिशिष्ट बतबैत अछि जे आत्मा आ अनात्माक भेद नहि बुझबाक कारण व्यवहारक भ्रम जन्मैत अछि। देहात्मबुद्धि मिथ्या होइतहुँ व्यवहारक आधार केना बनैत अछि—ई अद्वैतक कठिन प्रश्न अछि। लाठी उठौने मनुष्यसँ पशुक पाछाँ हटब आ हरियर घास देखि लग जाएबक उदाहरण अनुभवक व्यवहारिक स्तरकेँ प्रकाशमे अनैत अछि।

ककरो भ्रम होइत अछि तँ ओकर निर्णय, भय वा आकाङ्क्षा व्यवहारक कारण बनि सकैत अछि; एहि तथ्यसँ भ्रमक विषयक पारमार्थिक सत्यता अनिवार्य नहि होइत। मुदा एतयसँ आगाँ ई निष्कर्ष निकालब जे सम्पूर्ण जगत् मिथ्या अछि, अतिरिक्त तत्त्वमीमांसक तर्क माँगैत अछि। शास्त्रीय विवेचन जखन ई छल्लाँग लगबैत अछि, समीक्षाक कार्य ओकर आवश्यक मध्यवर्ती आधार देखब अछि।

संलग्न पाठमे ‘मिथ्या’ आ ‘गौण’ अहंबुद्धिक अन्तर बादमे फेर अबैत अछि। पहिल अध्यायमे एहन अन्तरक संकेत दिअबाक आवश्यकता अछि, ताकि पाठक ‘हम दुबर छी’ सन लोकवाक्यकेँ सर्वदा एकहि अर्थमे न पढ़थि।

मूल पाठ-साक्ष्य

“एहि प्रकार अध्यासक स्वरूप आ ओकर फल अर्थात् लौकिक व्यवहार बताओलापर भाष्यकार “एक-दोसरक भेद नहि बुझबाक कारण” एहि शब्दसँ ओकर कारण कहैत छथि; अर्थात् दुनूक पृथक्ता नहि बुझल जाएब।...”

तदनु रूप अंग्रेजी पाठक आरम्भ : Having thus stated the nature of superimposition and its fruit, namely ordinary conduct, the commentator states its cause with the words “because the...”

१५. अथातो ब्रह्मजिज्ञासा : ‘अथ’क चारि सम्भावना

पहिल ब्रह्मसूत्रमे ‘अथ’क आरम्भ, आनन्तर्य, मङ्गल आ पूर्वसन्दर्भ-सूचना सन अर्थक परीक्षा होइत अछि। मूल प्रश्न शब्दार्थक अकेलापन नहि, कोन पूर्वावस्था ब्रह्मजिज्ञासाकें अर्थवान बनबैत अछि, से अछि। ‘अथ’कें मात्र शुभ उच्चारण मानल जाए तँ सूत्रक तर्क-व्यवस्था अधूरी रहि सकैत अछि।

धर्मजिज्ञासाक बाद ब्रह्मजिज्ञासा अवश्य आएत—एहन दावा परिशिष्ट जाँचैत अछि। कर्मक ज्ञान आ ब्रह्मक ज्ञानक विषय, साधन तथा फल एक नहि। कर्मक सम्पन्नतासँ नित्य ब्रह्मक स्वरूप बनैत नहि; एतय साधनगत तैयारीक स्थान अछि, वस्तुक उत्पादनक नहि।

एहि विवेचनमे अद्वैत आ पूर्वमीमांसाक सम्बन्ध वैर-विरोध मात्र नहि। पहिल परम्परा विधिक शास्त्रार्थ सँ भाषिक औजार ग्रहण करैत अछि, मुदा ओकरा नित्य-वस्तुक ज्ञानक लक्ष्यक अनुकूल फेर व्यवस्थित करैत अछि। एहि आलोचनाक केन्द्र सूत्रक एहि पुनर्निर्धारणमे अछि।

मूल पाठ-साक्ष्य

“एहि सूत्रमे “अथ” शब्दक अर्थ “तत्काल अनन्तर” मानल गेल अछि, “आरम्भ कएल जाएब” नहि; कारण ब्रह्म कें जानबाक इच्छा स्वयं आरम्भ कराओल वस्तु नहि भऽ सकैत अछि। जानबाक इच्छा संशयसँ...”

तदनु रूप अंग्रेजी पाठक आरम्भ : In this sutra the word “atha” is taken to mean “immediately after,” not “let there be a beginning,” because the desire to know Brahman is not itself...

१६. साधनचतुष्टय : जिज्ञासाक अधिकारीक निर्माण

नित्यानित्यवस्तुविवेक, इहामुत्रफलभोगविराग, शमदमादिसम्पत्ति आ मुमुक्षुत्व—ई चारि साधन ग्रन्थमे ब्रह्मजिज्ञासाक उपयुक्त अधिकारीक सन्दर्भमे आएल अछि। एतय ‘अधिकारी’ शब्द आधुनिक सामाजिक पदाधिकारक बराबर नहि; शास्त्रीय अध्ययनक तैयारी आ प्रवृत्तिक प्रश्न अछि। मुदा एहि भेदक नाम पर पाठकाधिकारक ऐतिहासिक असमानता अनदेखा करब सेहो उचित नहि।

ज्ञानक विषय कर्ताक इच्छासँ नहि बनैत, मुदा ज्ञानार्जनक तैयारी मानवीय अभ्यासनिरपेक्ष नहि। ई दुई कथन परस्पर विरोधी नहि छथि: विषयक वस्तुतन्त्रता आ साधकक साधनसम्पन्नता भिन्न तार्किक स्तर पर छथि। परिशिष्टक ब्रह्मजिज्ञासा-विवेचन एहि अन्तरकें समझबाक सामग्री दैत अछि।

भाषिक रूपसँ साधनचतुष्टय सन शब्द अपन पारिभाषिक वलय सुरक्षित राखैत अछि। पाठकक सुविधा लेल ‘शम’, ‘दम’, ‘वैराग्य’ आ ‘मुमुक्षुत्व’क पहिल प्रयोगपर प्रसंगगत अर्थ देल जाए तँ अनुवाद अधिक सुलभ होयत, यद्यपि मूलक परिभाषिक विस्तार हेरायल नहि चाही।

मूल पाठ-साक्ष्य

“धर्म—जे जानबाक इच्छाक विषय अछि—उत्पन्न कएल जाएब जरूरी अछि; ज्ञान होएबाक समय ओ विद्यमान नहि रहैत, कारण ओ मनुष्यक क्रियापर निर्भर अछि। मुदा एतय जानबाक इच्छाक विषय नित्य...”

तदनुरूप अंग्रेजी पाठक आरम्भ : Dharma, which is the object of the desire to know, has to be brought into being; at the time of knowledge it is not present, because it depends upon human...

१७. जन्माद्यस्य यतः : तटस्थलक्षण आ कार्य-कारण

दोसर सूत्र जगतक उत्पत्ति, स्थिति आ लयक कारणक रूपमे ब्रह्मक अन्वेषण करैत अछि। परिशिष्ट सीमित, जड़, परिवर्तनशील जगतसँ असाधारण कारणक जानकारी कोना प्राप्त होए— ई आपत्ति उठबैत अछि। सिद्धान्त तटस्थलक्षणक माध्यमसँ ब्रह्मक परिभाषण करबाक मार्ग खोजैत अछि।

कुम्हार-घट अथवा व्यवस्थित जगत्-बुद्धिमान कारणक तुलना अनुमानक विधि पर प्रश्न खड़ा करैत अछि। मानव-निर्मित घटक कारणता अवलोकनसिद्ध अछि; सम्पूर्ण जगत् लेल ओही उदाहरणक प्रसार एकटा दार्शनिक अनुमान अछि, प्रयोगसिद्ध सिद्धान्त नहि। एतय व्याप्तिक स्वतन्त्र परीक्षण अनिवार्य अछि।

तटस्थलक्षणक लाभ ई जे अप्रत्यक्ष वस्तुक चर्चा ओकर सम्बन्धित ज्ञात प्रभावसँ शुरू कएल जा सकैत अछि। एकर जोखिम ई जे कार्यक अनिश्चित व्याख्याकै कारणक निश्चित स्वरूपक प्रमाण मानि लेल जाए। उपलब्ध पाठ ई द्वन्द्व स्पष्ट करैत अछि; आलोचनात्मक निष्कर्षमे दुनू पक्ष सुरक्षित रहबाक चाही।

मूल पाठ-साक्ष्य

“तखन ब्रह्मज्ञानो वस्तुतन्त्र होएत, कारण ओकर विषय विद्यमान वस्तु अछि। यदि विद्यमान वस्तु अछि, तऽ ब्रह्म आन प्रमाणक विषय अवश्य होएत; तखन वेदान्त-वाक्यक विचार निरर्थक नहि भऽ...”

तदनु रूप अंग्रेजी पाठक आरम्भ : Then Brahma-knowledge too is object-governed, because its object is an existent thing. If it is an existent thing, Brahman must be the object of other means...

१८. शास्त्रयोनित्वात् : ज्ञानक स्रोत आ शास्त्रक कारण

तेसर सूत्रमे ‘शास्त्रयोनित्वात्’क दुइ सम्भावना विमर्शित अछि: ब्रह्म शास्त्रक स्रोत छथि अथवा शास्त्र ब्रह्म-ज्ञानक साधन अछि। समासक अर्थ बदललासँ प्रमाणगत प्रश्नो बदलैत अछि। पहिल व्याख्या ब्रह्मक सर्वज्ञताक प्रतिपादन दिशि बढैत अछि; दोसर ब्रह्मक ज्ञेयता आ वेद-वाक्यक प्रमाणविधि पर केन्द्रित अछि।

मशाल जकाँ प्रकाशित विशाल शास्त्रसमूहक रूपक स्वतन्त्र बौद्धिक सौन्दर्य रखैत अछि। मुदा प्रकाशक-स्रोतक काव्यात्मकता शास्त्रक प्रत्येक विशिष्ट ऐतिहासिक पाठक अक्षरशः सत्यापन नहि करैत। तर्कक नियत क्षेत्र आ विश्वासक व्यावहारिक स्वीकृति अलग राखब आवश्यक अछि।

ब्रह्म इन्द्रियादिकेँ अविषय होइतहुँ शास्त्रसँ ज्ञानगम्य कहल जाए—एहि कथनमे शास्त्रप्रामाण्यक प्रश्न प्रखर भऽ जाइत अछि। मात्र प्राधिकारपर विश्वास आ प्रमाणक स्वतन्त्र औचित्य एक नहि। भामतीक विश्लेषण एहि अन्तरक समुचित परीक्षण लेल उपयोगी सामग्री दैत अछि।

मूल पाठ-साक्ष्य

“ब्रह्म यद्यपि पहिनहिसँ विद्यमान वस्तु छथि, तथापि प्रत्यक्ष आदिक विषय नहि छथि।

“तत्त्वमसि” मे कहल गेल जे ब्रह्म स्वयं आत्मा छथि; अतएव पूर्वापर वाक्यक विचारक बिना हुनका बुझल...”

तदनु रूप अंग्रेजी पाठक आरम्भ : Although Brahman is an already existent reality, Brahman is not the object of perception and the like. In “That thou art,” it is stated that Brahman is the...

११. तत्तु समन्वयात् : वेदान्तवाक्यक एकवाक्यता

चारिम सूत्रक समन्वयाधिकरण उपलब्ध अनुवादक विस्तृत आ तर्कसघन हिस्सा अछि। पूर्वमीमांसक पक्ष शास्त्रक प्रयोजन विधि आ कर्ममे देखैत अछि; सिद्धान्त वेदान्त-वाक्यसभकें सिद्ध ब्रह्मक ज्ञानात्मक प्रतिपादनक रूपमे पढ़ैत अछि। एहि विवादमे ‘वाक्य कोन काज करैत अछि’ ई प्रश्न ‘वाक्य की कहैत अछि’ जतेकहि महत्त्वपूर्ण अछि।

उपक्रम, उपसंहार, अभ्यास आदि तात्पर्यलिङ्गक सहायतासँ अनेक उपनिषद्-वाक्यक एक दिशा निश्चित करबाक प्रयास अछि। मुदा एकवाक्यता स्थापित कएलाक बादो भिन्न प्रसङ्गक वाक्यसभक ऐतिहासिक तथा शैलीगत भेद समूल हटि नहि जाइत। समीक्षाक कसौटी ई अछि जे तात्पर्यक एकता सिद्ध करबाक प्रमाण प्रस्तुत हो, केवल पहिनेसँ मानल नहि जाए।

‘सदेव सोम्य इदमग्र आसीत्’ आ ‘एकमेवाद्वितीयम्’ सन वाक्यक एक संग उपयोग प्रस्थानत्रयी-परम्पराक विशिष्ट तर्कक ढंग अछि। मैथिली अनुवाद तिनक संस्कृत रूप सुरक्षित राखैत आसपासक विवेचन स्थानीय भाषामे दैत अछि। ई द्विस्तरीय अनुवादनीति व्याख्यात्मक लाभ दैत अछि, मुदा स्रोतपाठ आ अनुवादक सीमाक स्पष्ट अंकन आवश्यक रहैत अछि।

मूल पाठ-साक्ष्य

“कर्म आ ब्रह्मक ज्ञान तथा फलमे मूलभूत भेद अछि। कर्म शरीर, वाणी अथवा मनसँ सम्पन्न होइत अछि, शास्त्र आ स्मृतिसँ धर्म कहल जाइत अछि, आ ओकर फल सुख-दुःखरूप उत्पाद्य आ विनाशी अछि।...”

तदनु रूप अंग्रेजी पाठक आरम्भ : There is a fundamental difference between action and knowledge of Brahman, as also between their fruits. Action is performed by body, speech, or mind, is...

२०. ज्ञानक स्वतःप्रामाण्य : वस्तुतन्त्र आ पुरुषतन्त्र

परिशिष्टक एकटा निर्णायक प्रतिपादन अछि जे सत्यज्ञान वस्तु जेहन अछि ओही रूपकें विषय बनबैत अछि। वस्तुतन्त्र ज्ञान आ पुरुषतन्त्र कर्मक अन्तर एतयसँ उभरैत अछि। कर्म करबाक वा नहि करबाक विकल्प कर्ता लग रहैत अछि; जँ ज्ञान वास्तवमे प्रमाणजन्य अछि, तँ ओकर विषय इच्छानुसार बदलि नहि सकैत छी।

मुदा ‘ज्ञान वस्तुतन्त्र अछि’ सँ ‘हर ज्ञान यथार्थ अछि’ निष्कर्ष नहि निकलैत अछि। भ्रम, संशय, स्मृति आ प्रमाणजन्य बोधक अलग अवस्था अछि। एतय स्वतःप्रामाण्यक विमर्शकें ज्ञानक उत्पत्ति, ओकर विषय, आ तकर वैधताक निर्धारण तीन स्तरमे पढबाक चाही।

अनुवादमे ‘ज्ञान’, ‘प्रमाण’, ‘प्रामाण्य’ आ ‘अनुभव’ परस्पर निकट रहने सेहो समर्थक नहि। एहि पारिभाषिक भेदक सुरक्षित रहब मैथिली दार्शनिक गद्यक प्रमुख उपलब्धि आ परीक्षा—दुनू अछि।

मूल पाठ-साक्ष्य

“सत्यज्ञान वस्तु जइ रूपमे अछि, ओही रूपकें विषय बनबैत अछि। अतएव ओकरा इच्छा अनुसार उत्पन्न, अनुत्पन्न वा भिन्न रूपें उत्पन्न नहि कएल जा सकैत। ओ न विधिपर निर्भर अछि, न व्यक्तिपर...”

तदनु रूप अंग्रेजी पाठक आरम्भ : True knowledge takes as its object the thing exactly as it is. Therefore it cannot be produced, left unproduced, or produced in a different form according to...

२१. मोक्षक चारि कार्यता : उत्पाद्य, विकार्य, संस्कार्य, आप्य

समीक्ष्य पाठ मोक्षकै उत्पन्न, परिवर्तित, संशोधित अथवा बाहरसँ प्राप्त होमयवला वस्तु मानबाक चारू सम्भावनाक आलोचना करैत अछि। दही बनबाक परिवर्तन, घट बनबाक उत्पादन, वस्तुक सफाई आ प्राप्तिसम्बन्धी दृष्टान्त साधारण अनुभवसँ सिद्धान्तक सीमा बुझबैत छथि। ई तर्क ‘मोक्ष नित्य अछि’क दाबीकै कर्मफलसँ पृथक स्थापित करबाक प्रयत्न अछि।

‘आप्य’क खण्डनमे नाविक-नौकाक छवि रोचक अछि: बदलैत तट, फेन आ तरङ्ग छोड़ि स्थिर केन्द्रकै पहुँचनिहार यात्रीक भाषा नित्यप्राप्त आत्माक चेतनाक रूपक बनैत अछि। मुदा प्राप्ति-रूपक नित्यप्राप्तताक शाब्दिक प्रमाण नहि। जखन साधक ‘पबैत’ छथि तखन वास्तवमे बदलैत की अछि—ज्ञान, अनुभव, भ्रम कि वास्तविक स्थिति? भामतीक उत्तर ज्ञानक रूपान्तर पर बल दैत अछि।

एहि प्रतिपादनमे मोक्षक नित्य स्वरूपक कल्पना नैतिक क्रियाक अप्रासंगिकता नहि सिद्ध करैत। साधन, अध्ययन आ वैराग्यक मानवीय प्रक्रम ओतय महत्त्वपूर्ण रहैत अछि; मोक्ष स्वयं कर्ता-सृष्ट वस्तु नहि—ई दूनू विधानकै परस्पर अविरोध रूपेँ पढ़बाक चाही।

मूल पाठ-साक्ष्य

“पूर्वपक्षी कहैत अछि—संसारावस्था छोड़ि आत्माक कैवल्यवस्था प्राप्त करब मोक्ष अछि; अतएव मोक्ष एक प्रकारक परिवर्तन अछि। जइ प्रकार दूध पहिल अवस्था छोड़ि दहीरूप दोसर अवस्था...”

तदनु रूप अंग्रेजी पाठक आरम्भ : The Purvapakshin says: liberation consists in abandoning the state of Samsara and attaining the isolated state of the Self; therefore liberation is a kind of...

२२. कूटस्थ नित्यता आ भेदाभेदक परीक्षा

परिवर्तनसँ गुजरैत वस्तुक क्रमिक स्थायित्व आ पूर्ण अपरिवर्तनशील कूटस्थ नित्यता अलग धारणा अछि। ब्रह्मक नित्यता परिशिष्टमे दोसर प्रकारक कहल गेल अछि। एतय आलोचना ई पूछि सकैत अछि जे परिवर्तनशील अनुभवक भीतर अपरिवर्तनशीलक प्रमाण कोन अछि, आ कूटस्थ अवधारणा तर्कक कोन समस्या हल करैत अछि।

सुवर्ण, कङ्कण आ कुण्डलक उदाहरणसँ भेदाभेदवादक विवाद उठैत अछि। एकहि पदार्थक बहुरूपता सँ पूर्ण अभेद सिद्ध होइत अछि वा विशेषरूपक विशिष्टता सेहो बचैत अछि—ई प्रश्न सुनिर्दिष्ट अछि। सूत्रग्रन्थक उपमा दर्शनक विकल्पक पूर्ण निपटारा नहि करैत; ओ तर्कक बीच एकटा परीक्षण-क्षेत्र प्रस्तुत करैत अछि।

मैथिली प्रस्तुति एहन गूढ़ उदाहरणकेँ सहज बनबैत अछि, मुदा ‘अभेद’ कहिते पदार्थगत तादात्म्य, गुणगत समानता आ शब्दगत पर्यायता एक नहि मानबाक चाही। एहि विभाजनसँ अद्वैत-भेदाभेद सम्बन्धक विश्लेषण अधिक शास्त्रीय सटीकता पबैत अछि।

मूल पाठ-साक्ष्य

“जँ कहल जाए जे सुवर्णरूपेँ अभेद अछि, कङ्कणरूपेँ कुण्डल आदिसँ भेद अछि, तखन उत्तर अछि—जँ कङ्कण सुवर्णसँ अभिन्न अछि, तखन सुवर्णक पुनरावृत्ति जहाँ-जहाँ अछि, ओतय कङ्कणो पुनरावृत्त...”

तदनु रूप अंग्रेजी पाठक आरम्भ : If it is said that there is non-difference insofar as there is gold, but difference from an earring and so forth insofar as it is a bracelet, the answer is...

२३. सिद्धवस्तुवाक्यक फल : शास्त्रीय भाषा-दर्शन

‘सिद्ध वस्तुक कथन निष्फल अछि’—ई पूर्वपक्ष पाठकक भाषा-संवेदना हिला दैत अछि। जँ वाक्य केवल कर्म करवाबय लेल अर्थवान मानल जाए, तँ शुद्ध वर्णनात्मक ज्ञानक प्रयोजन कहाँ रहत? भामतीक उत्तर ई स्थापित करबाक प्रयास अछि जे ज्ञान स्वयं किछु मिथ्याधारणा हटबैत, निर्णय बदलैत आ जीवन-व्यवहारपर असर करैत अछि।

सुमेरुपर्वतक वर्णन, भाषा नहि जाननिहार व्यक्तिक कथा, आ राहुक कथन सन दृष्टान्त वाक्यबोधक जटिलता खोलैत छथि। वाक्य अर्थ देब, प्रेरणा देब आ व्यवहार बदलब—ई तीन भिन्न प्रकारक प्रभाव छथि। वर्णनात्मक वाक्यक प्रमाणत्व स्वीकार करबाक लेल ओकरा अनिवार्यतः आदेशमे बदलबाक आवश्यकता नहि।

आधुनिक भाषादर्शनसँ तुलना एतय उपयोगी अछि, मुदा समानता सिद्ध होएबासँ ऐतिहासिक प्रभाव सिद्ध नहि होइत। वर्णन बनाम विधिक भेद स्वतंत्र रूपसँ भारतीय मीमांसा-वेदान्त विवादमे विकसित अछि। एतय तकर अपन पारिभाषिक इतिहासक आदर राखब आवश्यक अछि।

मूल पाठ-साक्ष्य

“आत्माकेँ कोनो विधिक सहायक रूपमे जोड़ल नहि जा सकैत। किएक? कारण ओ आत्मा छथि। आत्मा कोनो दोसर वस्तुक लेल नहि, बल्कि सभ दोसर वस्तु आत्माक लेल अछि। श्रुति कहैत अछि—“सभ वस्तु सभ...”

तदनुरूप अंग्रेजी पाठक आरम्भ : The Self cannot be connected as an auxiliary to any injunction. Why? Because it is the Self. The Self is not for the sake of anything else; rather, all other...

२४. नञ्, निषेध आ पर्युदासक व्यावहारिक तर्क

‘नहि मारू’, ‘नहि पीबू’ वा व्रतसम्बन्धी निषेध वाक्य सभ अनिवार्यतः स्वतंत्र सकारात्मक विधि अछि कि पहिनेसँ चलि रहल प्रवृत्तिक निवृत्ति बुझबैत अछि—ई प्रश्न चतुःसूत्रीक महत्त्वपूर्ण भाषातात्त्विक भाग अछि। परिशिष्ट नञ्-पदक अभावबोध, पर्युदास आ निषेधजन्य उदासीनताक अनेक भेद खोलैत अछि।

इन्धन समाप्त होइते आगिक शान्त होएब तथा कवच हटला पर बाणक अभावमे क्षति नहि होएबाक दृष्टान्त एहि वादक मार्गदर्शक छथि। कार्यक उत्पत्ति आ कार्यक निवृत्ति दूनूकें समान विधि-तन्त्रसँ बुझबाक आवश्यकता नहि; कतेको बेर बाधक कारण हटिते व्यवहार रुकि जाइत अछि।

इएह भाषादर्शनक दृश्यमे मूल पाठक नकारात्मक वाक्यसभ अर्थहीन नहि रहैत। मुदा हर निषेधक अर्थ प्रसङ्गपर निर्भर अछि; प्रतिज्ञा, धार्मिक व्रत आ सामान्य नैतिक आदेश अलग सामाजिक प्रकार छथि। सार्वत्रिक निष्कर्षसँ पहिने एहि भेदक परीक्षण जरूरी अछि।

मूल पाठ-साक्ष्य

“अतएव प्रत्येक ठाम विधिक विषय प्रयत्नक माध्यमँ केवल क्रियात्मक व्यापार अछि। “नहि मारू”, “नहि पीबू” आदिमे जँ कोनो कर्तव्य मानल जाए, तखन ओकर व्यापक संकल्प वा प्रयत्न सेहो मानब...”

तदनु रूप अंग्रेजी पाठक आरम्भ : Therefore in every case the object of an injunction, through effort, is only an activity in the form of action. If some duty is admitted in “Do not kill,”...

२५. जीवन्मुक्ति : ज्ञानक बाद जीवनक अवस्था

ब्रह्मज्ञानसँ देह-आत्मबुद्धिक निवारण होएत, मुदा देहक व्यवहार तत्काल समाप्त भऽ जाए— एहन निष्कर्ष पुस्तक नहि मानैत। परिशिष्टमे सर्पक उतरल केंचुली, धनाभिमान आ देहाभिमानक उदाहरणसभ द्वारा जीवन्मुक्तिक समस्या खुलैत अछि। प्रश्न अछि जे जाननिहार व्यक्ति व्यवहार करैत रहैत छथि तखन देह-सम्बन्धी वाक्यक वैधता कोन स्तरपर बचैत अछि।

आत्मज्ञानक उदयकेँ नव वस्तु निर्माण नहि, भ्रमनिवारण मानबाक कारण ई विवेचन पूर्व मोक्षचर्चासँ जुड़ैत अछि। इएह सम्पूर्ण चतुःसूत्रीक तर्क-एकता अछि: जिज्ञासा प्रश्न उठबैत अछि, अध्यास बन्धन बुझबैत अछि, शास्त्र ज्ञानक साधन बनैत अछि, आ मोक्ष अज्ञान-निवृत्तिक रूपमे स्थापित होइत अछि।

ई एकता पुनर्निर्मित सिद्धान्तात्मक पाठ अछि, मूल संस्कृतक स्वतंत्र प्रमाणित पाठक पर्याय नहि। आधुनिक समीक्षामे मानवीय अनुभव, सामाजिक व्यवहार आ आत्मविद्याक सम्बन्धपर प्रश्न खुल्ला रहबाक चाही; ताहिसँ मूल ग्रन्थक दार्शनिक महत्त्व घटैत नहि।

मूल पाठ-साक्ष्य

“एही प्रकार शरीरादिक समूहमे आत्मा आ अनात्माक अविवेकसँ ‘हम’ शब्द आ ‘हम’ बुद्धि उत्पन्न होइत अछि; एकरा गौण केना कहल जा सकैत अछि? आत्मा-अनात्माक विवेकजन्य ज्ञान राखनिहार विद्वान्...”

तदनुरूप अंग्रेजी पाठक आरम्भ : In the same way, through failure to discriminate Self and non-Self in the aggregate of body and the like, the word “I” and the cognition “I” arise; how can...

२६. मैथिली अनुवादक वाक्यगठन : पारिभाषिकता आ देशज प्रयोग

भामतीक मैथिली गद्य ठोस बौद्धिक शब्दरचनाक प्रयोग करैत अछि—अध्यास, अनिर्वचनीयख्याति, प्रत्यभिज्ञा, स्वतःप्रामाण्य, तात्पर्यलिङ्ग, पर्युदास, वस्तुतन्त्र। ई पारिभाषिक शब्दक सामान्य घरेलू पर्याय राखि देला सँ मूल तर्कक सूक्ष्म सीमासभ हेराए सकैत अछि। शुद्ध मैथिली एतय संस्कृत-शब्दक निषेध नहि, मैथिली वाक्य-व्यवस्थामे तिनक नियन्त्रित प्रयोग अछि।

‘मुस्की’, ‘इजोत’, ‘अन्हार’, ‘बाछा’ सन प्रयोग दार्शनिक प्रश्नकें सांस्कृतिक रूपसँ निकट करैत अछि। मुदा किछु वाक्य अत्यन्त दीर्घ आ अनेक आश्रित उपवाक्ययुक्त छथि। सुगमता लेल बहु-वाक्य विभाजन उचित होएत बशर्ते आपत्ति, उत्तर आ तात्पर्यक सम्बन्ध नष्ट नहि हो।

एहि अनुवादक मुख्य उपलब्धि केवल शब्दकोशीय समृद्धि नहि। मैथिली वाक्य प्रतिज्ञा, हेतु, उपमा, खण्डन आ सिद्धान्तक पूरा आन्तरिक गतिशीलता बहन करैत अछि। ई क्षमता आलोचनात्मक प्रशंसाक वास्तविक आधार अछि—मात्र लेखकक क्षेत्रीय पहिचान नहि।

मूल पाठ-साक्ष्य

“एहि अनुवादक सभसँ पैघ उपलब्धि ई अछि जे ई “शुद्ध मैथिली”क प्रतिज्ञा कें पारिभाषिक शुद्धताक संग निभबैत अछि। तीन स्तरपर एकर रणनीति देखल जा सकैत अछि। पहिल, पारिभाषिक शब्दक...”

२७. अध्याय १ आ २क स्वतन्त्र समीक्षा : पाठक लेल सहायता कि पूर्वनिर्णय?

मूल पुस्तकक पहिल दू अध्याय पहिनेसँ अनुवादक प्रशंसात्मक आलोचना करैत अछि; तिनक स्थान पाठकक दिशानिर्देशमे उपयोगी अछि। मुदा तत्सम्बन्धी किछु वाक्य अनुवादक तर्कक्रममे तनिकहु विचलन नहि भेलाक व्यापक निर्णय करैत अछि। स्वतंत्र संस्कृत आलोचनात्मक संस्करणक पाँतिवार मिलान बिना एहन निरपेक्ष दावा कठोर पाठालोचनाक कसौटी पर रोकि रखबाक चाही।

दोसरा अध्यायमे अध्याससँ चारि सूत्र धरि उपशीर्षकसभ व्यवस्थित अछि; दार्शनिक विवादक तात्कालिक मानचित्र पाठक पबैत छथि। समीक्षकक नजरिँ ई अतिरिक्त मूल्य अछि। मुदा जँ एहि अग्रिम विवेचनकें ‘मूल ग्रन्थ’ बुझि उद्धृत कएल जाए, तँ वाचस्पतिक प्रतिपादन आ आधुनिक टीकाकारक पुनर्रचना मिलि जाएत।

एहि लेल शोधार्थीक पढ़बाक क्रम उलटा उपयोगी अछि—पहिने तेसर अध्यायक मैथिली पाठ, फेर चौथा अध्यायक सन्दर्भसूची, तकर बाद पहिल दू अध्यायक आलोचना। ई पद्धति प्रशंसा-प्रमाणक आत्मनिर्भर चक्रसँ बचेबाक व्यावहारिक साधन अछि।

मूल पाठ-साक्ष्य

“चतुःसूत्री-भामतीक एहि शुद्ध मैथिली रूपान्तरक महत्त्व केवल एतबे नहि जे एकटा संस्कृत दार्शनिक ग्रन्थ मैथिलीमे उपलब्ध भेल। एकर वास्तविक उपलब्धि ई अछि जे अध्यास, अविद्या...”

२८. मैथिली-अंग्रेजी रूपान्तर : शब्द-साम्य आ अर्थ-संरचना

अंग्रेजी खण्ड मे परिशिष्टक अध्यायक्रम मैथिली रूपान्तरसँ मेल खाइत अछि। ‘मुस्की’क ‘smile’, ‘अन्हार आ इजोत’क ‘darkness and light’, ‘हम’क ‘I’ आ ‘अहाँ’क ‘you’ वाच्यार्थक स्तरपर निकट छथि। मुदा सन्दर्भगत नैयायिक पद आ साधारण अंग्रेजी शब्दकेँ समान मानि लेब एतय खतरनाक भऽ सकैत अछि।

उदाहरणार्थ ‘श्रुतिजन्य ज्ञान प्रत्यक्षक व्यवहारिक प्रामाण्य केँ नष्ट नहि करैत अछि’क अंग्रेजी पाठ ‘Knowledge born of Shruti does not destroy the practical validity of perception’ कहैत अछि। एतय ‘व्यवहारिक’क ‘practical’ आ ‘प्रामाण्य’क ‘validity’ क्रम अर्थ-संगति राखैत अछि, मुदा ‘पारमार्थिक’क दार्शनिक विपरीत अर्थ दर्शाबय लेल स्थिर शब्दावली चाही।

दूनू भाषाक तुलना मूल संस्कृतक पुनर्प्राप्ति नहि अछि; ई मैथिली आ अंग्रेजी प्रतिक बीच असङ्गति, उपमा-क्षति आ पारिभाषिक भ्रम पकड़बाक विधि अछि। अनुवादक लेखकीय श्रेय एतय मैथिली पाठमे स्पष्ट अछि; अंग्रेजी खण्डक अनुवादक/सम्पादक श्रेय निश्चित करबाक लेल प्रकाशकीय विवरण अलग जाँचबाक चाही।

मूल पाठ-साक्ष्य

“श्रुतिजन्य ज्ञान प्रत्यक्षक व्यवहारिक प्रामाण्य केँ नष्ट नहि करैत अछि; नहि तँ अपन कारणक अभावसँ ओ स्वयं उत्पन्ने नहि होइत। ओ प्रत्यक्षक केवल पारमार्थिक प्रामाण्यक निषेध करैत...”

तदनुरूप अंग्रेजी पाठक आरम्भ : Knowledge born of Shruti does not destroy the practical validity of perception; otherwise, through absence of its own cause, it would not arise at all. It...

२९. परिशिष्टक काव्यात्मक अङ्ग : रूपक प्रमाणकैँ कोना सहारा दैत अछि

मृगतृष्णा, सूत-गूँथल फूल, उलटल नील कटोरा, अन्हरक पथ-भ्रम आ शान्त समुद्रक बीच नाविक—ई बिम्बसभ तर्कक बीच उभरैत छथि। एकरा केवल ‘सुन्दर भाषा’ कहब अपर्याप्त अछि। प्रत्येक बिम्ब एकटा दार्शनिक भेद दृश्यात्मक करैत अछि: स्मृतिक निरन्तरता, भ्रमक प्रत्यक्षता, ज्ञानक अनवस्था अथवा नित्यप्राप्तता।

तथापि दृष्टान्तक काव्य-बल प्रमाणक अधिकृत क्षेत्रसँ आगाँ नहि जाए। फूलक सूतसँ आत्माक नित्यता शब्दशः सिद्ध नहि; अन्हरक अन्हरकैँ पकड़ि चलब चेतनाक स्वप्रकाशक केवल सहज अनुमान दैत अछि। ई सीमा मानलासँ काव्यशक्तिक अवमूल्यन नहि, उलटे ओकर सही कार्य स्पष्ट होइत अछि।

भारतीय काव्यशास्त्रक ध्वनि, औचित्य आ वक्रोक्तिक दृष्टिसँ एहि उदाहरणसभपर विचार सम्भव अछि। मुदा रस-सिद्धान्तक प्रत्येक श्रेणी दार्शनिक शास्त्रार्थपर यन्त्रवत् थोपब उचित नहि। मूल पाठक प्राथमिक लक्ष्य प्रमाणनिर्माण अछि; साहित्यिक उपकरण ताहि प्रक्रियाक सहभागी छथि।

मूल पाठ-साक्ष्य

“वेद हुनक श्वास छथि, पाँचो महाभूत हुनक दृष्टि छथि, चल-अचल जगत हुनक मुस्की अछि आ हुनक निद्रा महाप्रलय अछि।”

तदनुरूप अंग्रेजी पाठक आरम्भ : The Vedas are His breath, the five great elements are His sight, the moving and unmoving world is His smile, and His sleep is the great dissolution.

३०. मिथिलाक समानान्तर बौद्धिक इतिहासमे स्थान

वाचस्पति मिश्रक नाम मिथिलाक न्याय, सांख्य, योग आ वेदान्तपरम्पराक बीच संवादक सेतु बनैत अछि। संलग्न पुस्तकमे ‘न्यायवार्तिकतात्पर्यटीका’, ‘तत्त्वकौमुदी’ आ ‘तत्त्ववैशारदी’क उल्लेख भेटैत अछि। ई बहुशास्त्रीय उपस्थिति भामतीक तर्कक पृष्ठभूमि बुझबाक संकेत दैत अछि, मुदा प्रत्येक ग्रन्थक विस्तृत तुलनात्मक पाठ-परीक्षा एतय भेल नहि अछि।

स्थानीय भाषा मे शास्त्रीय अध्ययन उपलब्ध होएब बौद्धिक सार्वजनिकताक विस्तार अछि। भाषा बदलला सँ दार्शनिक साक्ष्यक स्वरूप नहि बदलैत, मुदा पाठकवर्गक पहुँच आ प्रतिवाद करबाक संभावना बदलैत अछि। मिथिलाक ‘समानान्तर’ इतिहासक सम्भावना एतय स्थानीय गौरवक घोषणा नहि, अधिक पाठक आ अधिक सार्वजनिक विमर्शक अवसरमे देखब उचित अछि।

एहि अध्ययनमे पाश्चात्य ज्ञानमीमांसा, आधुनिक भाषादर्शन वा व्याख्याशास्त्रक तुलनाक प्रयोग अवधारणात्मक प्रकाश लेल कएल गेल अछि। ऐतिहासिक प्रत्यक्ष प्रभाव, संप्रेषण अथवा पाठ-आदानप्रदानक दावा तखनहि होएत जखन ओकर स्वतंत्र प्रमाण भेटत। ई अनुशासन समानान्तर अध्ययनक विश्वसनीयता बढ़बैत अछि।

मूल पाठ-साक्ष्य

“भारतीय दर्शनक इतिहासमे मिथिलाक जे सभसँ उज्ज्वल देन अछि, ताहिमे वाचस्पति मिश्र (नवम शताब्दी)क “भामती” अग्रगण्य अछि। शंकराचार्यक ब्रह्मसूत्रभाष्यपर लिखल ई टीका अद्वैत वेदान्तक...”

३१. ग्रन्थसूची : प्रामाणिक स्रोत आ अप्रामाणित विवरणक अन्तर

मूल पुस्तकक चारिम अध्यायमे ब्रह्मसूत्र-भाष्य, भामतीक संस्कृत संस्करण, कल्पतरु-परिमल परम्परा, वाचस्पतिक अन्य रचना, आधुनिक शोध आ डिजिटल साधन अलग-अलग समूहमे दाएल गेल छथि। विषयगत विभाजन उपयोगी अछि, कारण पाठक सूत्र, भाष्य, टीका आ आधुनिक अध्ययनकेँ एकहि प्रमाण-मूल्य नहि दैत छथि।

अन्तिम विभाग स्वयं किछु दुर्लभ पुस्तकमाथि ‘प्रकाशन-विवरण अनिश्चित’ स्वीकार करैत अछि। ई सम्पादकीय सावधानी प्रशंसनीय अछि। एहि समीक्षाक अन्तिम पुस्तकसूचीमे वेबपृष्ठ नहि, केवल मूल पुस्तकमे उद्धृत पहचानयोग्य मुद्रित कृतिसभ चुन्नल गेल छथि; ओहि विवरणक उपलब्ध फाइलक आधार पर मूलभूत पाठ-परीक्षण भेल अछि, बाहरी पुस्तकालयीय पुष्टि नहि।

‘स्रोतसँ उद्धरण’ आ ‘ग्रन्थसूचीमे नाम भेटल’ बीच अन्तर अछि। किछु पुस्तकक नाम मात्र उपलब्ध रहबाक कारण तिनक मत एतय प्रत्यक्ष पढ़ल गेल अछि—एहन दावा नहि कएल गेल। शोधार्थी लेल ई भेद स्वयं एकटा ज्ञानमीमांसक पाठ अछि: प्रमाणक परिधि जतय समाप्त होइत अछि, ओतय टिप्पणीकेँ सेहो रोकय पड़ैत अछि।

मूल पाठ-साक्ष्य

“प्रविष्टिसभ विषयगत क्रममे अछि; अन्तिम खण्डमे दुर्लभ आ अपूर्ण-विवरणवाला ग्रन्थ अलग राखल गेल अछि।”

३२. समेकित निर्णय : सम्भावना, सीमा आ अगिला संशोधन

संलग्न ‘भामती’क विशेष उपलब्धि ई अछि जे तर्कपरम्पराक घनत्वक बिना मैथिली गद्य केवळ सरलीकृत सारांश नहि बनैत अछि। मूल प्रश्न उठाओल जाएत अछि, विरोधी मत प्रस्तुत होइत अछि, दृष्टान्त जाँचल जाइत अछि, अनि निष्कर्षक सीमा स्पष्ट होइत अछि। मैथिली पाठक चतुःसूत्रीक विशिष्ट दार्शनिक पद्धति पढ़ि सकैत छथि।

मुदा ई अध्ययन मूल संस्कृत पाठक स्वतंत्र आलोचनात्मक प्रतिशब्दीय सम्पादन नहि अछि। पहिल दू अध्यायक स्वयं प्रशंसात्मक निर्णयकेँ स्वतंत्र आलोचनाक विकल्प नहि मानल जा सकैत। अंग्रेजी विभागक समृद्धि उपलब्धि अछि, मुदा ओकर प्रकाशकीय अनुवादक-श्रेय आ पारिभाषिक संगतिक प्रामाणिक सूची अधिक उपयोगी होएत।

आगामी आदर्श संस्करणमे मूल संस्कृतक प्रमाणित पाठ, मैथिली अनुवाद, अंग्रेजी रूपान्तर, पाठान्तर-सूची, तकनीकी शब्दकोश, मूल-अनुवाद अनुच्छेद-समतुल्यता आ मुद्रित पृष्ठ-सन्दर्भ साथ राखल जाए। एहि सुधारसभक आवश्यकता स्वीकार करब ग्रन्थक मूल्य घटेनाइ नहि; ओ मैथिली दार्शनिक प्रकाशनकेँ वास्तविक शोध-अनुशासनक दिशि बढ़एबाक प्रस्ताव अछि।

मूल पाठ-साक्ष्य

“जगतक परम सत्यता माननिहारो स्वीकार करैत छथि जे शरीर आदिमे आत्मबुद्धि मिथ्या अछि, कारण प्रमाणजन्य ज्ञान ओकर बाध करैत अछि। तथापि एही मिथ्या आत्मबुद्धिकेँ सभ प्रमाणज्ञानक कारण आ...”

तदनु रूप अंग्रेजी पाठक आरम्भ : Even those who hold the world to be ultimately real accept that the cognition of the Self in body and the like is false, because knowledge produced by a...

मैथिली-अंग्रेजी प्रमाण-सारणी

एहि सारणीमे दूनू विभागक एकहि क्रमवला अनुच्छेदक प्रारम्भिक पाठ देल अछि। उद्धरण छोट कएल गेल अछि, मुदा उद्धृत अंशक अक्षर मूल फाइलसँ उठाओल गेल अछि। ई संस्कृतसँ प्रतिशब्दीय मिलान नहि अछि।

01 विषय-विषयीक आरम्भिक विरोध

मैथिली : “अहाँ” आ “हम” ई दुइ अवधारणाक क्षेत्र—विषय आ विषयी—अपन-अपन स्वभावमे अन्हार आ इजोत जकाँ एक-दोसरक विपरीत अछि। जखन ई सिद्ध अछि जे एक दोसरक स्वरूप बुद्धिगम्य रूपेँ नहि भऽ सकैत अछि, तखन एकक धर्मसभ दोसरक अधिष्ठानमे एक भऽ जाएब ताहूसँ बेसी अबुद्धिगम्य अछि। एहि कारण...

English : The fields of the two notions, “you” and “I”—the object and the subject—are, by their very natures, opposed to one another like darkness and light. When it is established that the nature of one cannot intelligibly be that of the other, it is even less...

02 मङ्गलाचरणक देशज बिम्ब

मैथिली : वेद हुनक श्वास छथि, पाँचो महाभूत हुनक दृष्टि छथि, चल-अचल जगत हुनक मुस्की अछि आ हुनक निद्रा महाप्रलय अछि।

English : The Vedas are His breath, the five great elements are His sight, the moving and unmoving world is His smile, and His sleep is the great dissolution.

03 जिज्ञासाक प्रयोजन

मैथिली : एखन, जाहि वस्तुक विषयमे कोनो सन्देह नहि अछि अथवा जकर ज्ञानसँ कोनो प्रयोजन नहि सिद्ध होइत अछि, ओ विवेकी जिज्ञासुक जानबाक इच्छाक विषय नहि भऽ सकैत अछि। उदाहरणार्थ, तेज इजोतमे उपस्थित, मनसहित नेत्रेन्द्रियक सम्पर्कमे आयल घट; अथवा कौआक दाँत। ब्रह्मक विषय सेहो एतबे...

English : Now, an object about which there is no doubt, or knowledge of which serves no purpose, cannot become an object that a discriminating inquirer desires to know. For example, a pot present in bright light and brought into contact with the visual organ...

04 देह-परिवर्तनक प्रत्यभिज्ञा

मैथिली : यौवनक देह आ वृद्धावस्थाक देहक बीच वास्तवमे प्रत्यभिज्ञाक किंचितो चिह्न नहि अछि, जाहिसँ दुनूक एकत्व निश्चित कएल जा सकय। अतः जे परिवर्तनशील वस्तुसभमे निरन्तर एकरूप रहैत अछि, ओ ताहिसँ भिन्न अछि—जहिना फूलसभसँ ओकरा गूँथनिहार सूत भिन्न होइत अछि। तहिना “हम” शब्दसँ...

English : There is in fact not the slightest mark of recognition between the youthful body and the aged body by which their identity could be ascertained. Therefore, that which remains continuously the same amid changing things is different from them—just as the thread...

05 देह-आत्मवाक्यक गौणार्थ

मैथिली : देह आ आत्मामे अभेद नहि होइतहुँ “हम दुबर छी”, “हम अन्हर छी” इत्यादि वाक्य कहल जाइत अछि। हमरा मतमे एकर अर्थ गौण रूपेँ बुझबाक चाही, जहिना “दीर्घा चिचिया रहल अछि” वाक्यक अर्थ होइत अछि—दीर्घामे बैसल लोक चिचिया रहल छथि। अतः ई सिद्ध भेल जे देह, इन्द्रिय, मन, बुद्धि...

English : Although the body and the Self are not identical, statements such as “I am thin” and “I am blind” are made. In my view, their meaning should be understood figuratively, just as the statement “The long hall is shouting” means that the people seated in the long...

06 व्यावहारिक आ पारमार्थिक प्रामाण्य

मैथिली : श्रुतिजन्य ज्ञान प्रत्यक्षक व्यवहारिक प्रामाण्य केँ नष्ट नहि करैत अछि; नहि तँ अपन कारणक अभावसँ ओ स्वयं उत्पन्ने नहि होइत। ओ प्रत्यक्षक केवल पारमार्थिक प्रामाण्यक निषेध करैत अछि। श्रुतिज्ञानक कारणो पारमार्थिक रूपेँ सत्य प्रत्यक्ष नहि अछि; कारण व्यवहारिक रूपेँ...

English : Knowledge born of Shruti does not destroy the practical validity of perception; otherwise, through absence of its own cause, it would not arise at all. It negates only the ultimate validity of perception. Nor is the cause of scriptural knowledge a perception...

एहि उदाहरणमे पारिभाषिक पद, वाक्यक प्रतिज्ञा आ वक्ताक भूमिका अलगसँ जाँचबाक चाही; अंग्रेजी शब्दगत निकटता संस्कृत पाठक स्वतंत्र प्रमाण नहि।

07 अध्यास-लक्षणक अतिव्याप्ति

मैथिली : मानि लिअ। “पहिने देखल वस्तुक आन ठाम प्रकट होएब” ई परिभाषा अतिव्याप्त अछि। कारण कालाक्षी नामक गाएमे पहिने स्वस्तिमती गाएमे देखल गोत्वक प्रतीति होइत अछि। तहिना पाटलिपुत्रमे पहिने देखल देवदत्त केँ माहिष्मतीमे देखलापर आन ठाम ओही देवदत्तक प्रतीति होइत अछि। ई दुनू...

English : Granted. The definition “the appearance elsewhere of something previously seen” is too broad, because in the cow named Kalakshi there is the perception of cowhood previously seen in the cow Svastimati. Likewise, when Devadatta previously seen at Pataliputra...

08 ज्ञानक स्वतःप्रामाण्य

मैथिली : ...हम न्याय-कणिकामे दऽ चुकल छी। हमर मतमे ज्ञानक प्रामाण्य ओकर विषयसँ नियत सम्बन्धक कारण नहि, बल्कि ज्ञानबोध करएबाक अपन सामर्थ्यक कारण स्वतः अछि; अतः एतय विस्तार नहि कएल जा रहल अछि। स्मृतिक स्मृतित्व लुप्त भऽ जाएबाक सिद्धान्तक आलोचना एतय संक्षेपमे कएल गेल अछि...

English : ...by me in the Nyayakanika. In my view, the validity of cognition is intrinsic because of its own capacity to make known, not because of a fixed relation to its object; therefore the matter is not elaborated here. The doctrine that memory loses its character...

09 प्रथम सूत्रक शीर्षक

मैथिली : अतः आब ब्रह्म केँ जानबाक इच्छा

English : Therefore, now, the desire to know Brahman

10 जिज्ञासा आ फल

मैथिली : “जानबाक इच्छा” पदसँ भाष्यकार संशय आ फल—दुनूक अस्तित्व सूचित करैत छथि। एतय ब्रह्मज्ञान केँ स्पष्ट रूपेँ फल कहल गेल अछि, कारण ओ प्रत्यक्षतः इच्छाक विषय

अछि। कर्मज्ञानक बाद होमयवाला अनुष्ठान आ तकर परिणाम जकाँ ब्रह्मज्ञानक बाद कोनो दोसर वस्तु मुख्य फल नहि अछि।...

English : By the expression “desire to know,” the commentator indicates the existence of both doubt and fruit. Here knowledge of Brahman is explicitly called the fruit, because it is directly the object of desire. Unlike ritual action that follows knowledge of a rite...

11 धर्मज्ञान आ ब्रह्मज्ञान

मैथिली : धर्म—जे जानबाक इच्छाक विषय अछि—उत्पन्न कएल जाएब जरूरी अछि; ज्ञान होएबाक समय ओ विद्यमान नहि रहैत, कारण ओ मनुष्यक क्रियापर निर्भर अछि। मुदा एतय जानबाक इच्छाक विषय नित्य विद्यमान ब्रह्म अछि; ओ अनादि-अनन्त विद्यमान अछि आ मानवीय क्रियापर निर्भर नहि। दुनू विषयक...

English : Dharma, which is the object of the desire to know, has to be brought into being; at the time of knowledge it is not present, because it depends upon human action. But here the object of the desire to know is eternally existent Brahman; it exists without...

12 आत्मा आ ईश्वर सम्बन्धी मतभेद

मैथिली : किछु लोकक मतमे आत्मा केवल भोक्ता अछि, कर्ता नहि। आन किछु लोक कहैत छथि जे ओहि आत्मासँ भिन्न सर्वज्ञ आ सर्वशक्तिमान ईश्वर छथि। दोसर किछु लोकक मत अछि जे ईश्वर ओहि भोक्ता जीवक आत्मा छथि। एहि प्रकार अनेक लोक युक्ति तथा प्रमाणसिद्ध वा भ्रान्त शास्त्रवचनक आधारपर...

English : According to some, the Self is only an enjoyer, not an agent. Others say that there is an omniscient and omnipotent Lord distinct from that Self. Still others hold that the Lord is the Self of that enjoying Jiva. In this way many people adopt different views...

एहि उदाहरणमे पारिभाषिक पद, वाक्यक प्रतिज्ञा आ वक्ताक भूमिका अलगसँ जाँचबाक चाही; अंग्रेजी शब्दगत निकटता संस्कृत पाठक स्वतंत्र प्रमाण नहि।

13 तत्त्वमसिक तात्पर्य

मैथिली : ब्रह्म यद्यपि पहिनहिसँ विद्यमान वस्तु छथि, तथापि प्रत्यक्ष आदिक विषय नहि छथि। “तत्त्वमसि” मे कहल गेल जे ब्रह्म स्वयं आत्मा छथि; अतएव पूर्वापर वाक्यक विचारक बिना हुनका बुझल नहि जा सकैत अछि। जखन एही प्रसङ्गमे अन्य वाक्यसभक तात्पर्य सेहो ब्रह्ममे सिद्ध होइत अछि...

English : Although Brahman is an already existent reality, Brahman is not the object of perception and the like. In “That thou art,” it is stated that Brahman is the Self itself; therefore Brahman cannot be understood without examining the preceding and succeeding...

14 सुवर्ण-कङ्कण दृष्टान्त

मैथिली : जँ कहल जाए जे सुवर्णरूपेँ अभेद अछि, कङ्कणरूपेँ कुण्डल आदिसँ भेद अछि, तखन उत्तर अछि—जँ कङ्कण सुवर्णसँ अभिन्न अछि, तखन सुवर्णक पुनरावृत्ति जहाँ-जहाँ अछि, ओतय कङ्कणो पुनरावृत्ति होयबाक चाही। मुदा कुण्डलमे सुवर्णत्व अछि, कङ्कणत्व नहि; अतएव कङ्कण सुवर्णसँ भिन्न अछि।

English : If it is said that there is non-difference insofar as there is gold, but difference from an earring and so forth insofar as it is a bracelet, the answer is this: if the bracelet is non-different from gold, then wherever gold recurs, the bracelet too ought to...

15 वस्तुतन्त्र ज्ञान

मैथिली : सत्यज्ञान वस्तु जइ रूपमे अछि, ओही रूपकेँ विषय बनबैत अछि। अतएव ओकरा इच्छा अनुसार उत्पन्न, अनुत्पन्न वा भिन्न रूपेँ उत्पन्न नहि कएल जा सकैत। ओ न विधिपर निर्भर अछि, न व्यक्तिपर; केवल वस्तुपर निर्भर अछि। एहि कारण मानसिक होइतहुँ ज्ञान क्रियासँ स्वभावतः अत्यन्त...

English : True knowledge takes as its object the thing exactly as it is. Therefore it cannot be produced, left unproduced, or produced in a different form according to one's wish. It depends neither upon an injunction nor upon a person; it depends only upon the object....

16 शरीरित्वक मिथ्याज्ञान

मैथिली : शरीरित्व मिथ्याज्ञानसँ उत्पन्न होइत अछि। आत्माक शरीरित्व शरीरमे आत्मबुद्धिरूप मिथ्याज्ञानक अतिरिक्त कोनो दोसर प्रकारँ मानल नहि जा सकैत। अशरीरित्व नित्य अछि, कारण ओ कोनो कर्मसँ उत्पन्न नहि; ई बात पहिनहिसँ कहल जा चुकल अछि। जँ कहल जाए जे आत्माद्वारा अर्जित...

English : Embodiment is produced by false knowledge. The Self's embodiment cannot be admitted in any way other than through false knowledge in the form of identifying the Self with the body. Bodilessness is eternal because it is not produced by any action; this has...

17 आत्मा-अनात्माक अविवेक

मैथिली : एही प्रकार शरीरादिक समूहमे आत्मा आ अनात्माक अविवेकसँ ‘हम’ शब्द आ ‘हम’ बुद्धि उत्पन्न होइत अछि; एकरा गौण केना कहल जा सकैत अछि? आत्मा-अनात्माक विवेकजन्य ज्ञान राखनिहार विद्वान् लोक सेहो व्यवहारक अभ्यासमे, गड़ेरिया आ बकरी चरबनिहार जकाँ, ‘हम’ शब्द आ बुद्धिक भेद...

English : In the same way, through failure to discriminate Self and non-Self in the aggregate of body and the like, the word “I” and the cognition “I” arise; how can this be called figurative? Even learned persons who possess discriminative knowledge of the Self as...

18 मिथ्या बोध आ प्रमाणज्ञान

मैथिली : जगतक परम सत्यता माननिहारो स्वीकार करैत छथि जे शरीर आदिमे आत्मबुद्धि मिथ्या अछि, कारण प्रमाणजन्य ज्ञान ओकर बाध करैत अछि। तथापि एही मिथ्या आत्मबुद्धिकेँ सभ प्रमाणज्ञानक कारण आ संसारक वास्तविक व्यवहारक आधार मानल जाइत अछि। अद्वैतसाक्षात्कारक सम्बन्धमे हमर मत सेहो...

English : Even those who hold the world to be ultimately real accept that the cognition of the Self in body and the like is false, because knowledge produced by a valid means sublates it. Yet this very false self-cognition is regarded as the cause of all valid...

एहि उदाहरणमे पारिभाषिक पद, वाक्यक प्रतिज्ञा आ वक्ताक भूमिका अलगसँ जाँचबाक चाही;
अंग्रेजी शब्दगत निकटता संस्कृत पाठक स्वतंत्र प्रमाण नहि।

द्विभाषिक पारिभाषिक शब्दावली

दर्शाओल अंग्रेजी शब्द एहि समीक्षाक व्याख्यात्मक समतुल्य छथि। एकहि पारिभाषिक पदक प्रयोग मूल ग्रन्थमे प्रसङ्गभेदसँ बदलि सकैत अछि।

मैथिली / संस्कृत पद	अंग्रेजी समतुल्य	सन्दर्भ-विशेष
अध्यास	superimposition	अनेक विषयक धर्मक अनुचित आरोप; साधारण स्मृतिसँ भिन्न
अविद्या	ignorance / nescience	आत्मा-अनात्माक भेद नहि बूझबाक सिद्धान्तगत दशा
आत्मा	Self	विषयी चैतन्य; देह आ इन्द्रियसँ अलग उपपादन
अनिर्वचनीय	indeterminable	अनुभव आ बाधक प्रमाणक बीच सत्यतास्थितिक विशिष्ट व्याख्या
अनिर्वचनीयख्याति	theory of indefinable appearance	अद्वैतक भ्रमविषयक मत
अन्यथाख्याति	misapprehension as otherwise	नैयायिक भ्रम-विचारक प्रसङ्ग
प्रत्यभिज्ञा	recognition	भिन्न कालमे वस्तुक एकत्व-निर्णय
पूर्वपक्ष	opponent's prima facie view	परीक्षणार्थ प्रस्तुत प्रतिमत
सिद्धान्त	established position	आपत्तिक उत्तरसहित प्रतिपादन
ख्यातिवाद	theories of error	भ्रमक स्वरूप-विवाद
स्वयंप्रकाशता	self-luminosity	चैतन्यक आत्मसाक्षित्व; भौतिक प्रकाश नहि
अनवस्था	infinite regress	प्रत्येक ज्ञान लेल आन

		ज्ञानक अनन्त अपेक्षा
स्वतःप्रामाण्य	intrinsic validity	ज्ञानक वैधता-सम्बन्धी सिद्धान्त
वस्तुतन्त्र	object-determined	वस्तुसँ निर्धारित ज्ञान
पुरुषतन्त्र	agent-dependent	कर्ताक विकल्पाधीन क्रिया
ब्रह्मजिज्ञासा	inquiry into Brahman	ब्रह्मक ज्ञानक इच्छा आ परीक्षण
आनन्तर्य	immediacy of succession	अथ-पदक क्रमसूचक अर्थ
साधनचतुष्टय	fourfold qualification	विवेक, वैराग्य, शमदमादि आ मुमुक्षुत्व
तटस्थलक्षण	extrinsic indicator	प्रभावादिक आधारपर वस्तुक संकेत
शास्त्रयोनि	source of scripture / scripture as source	समासगत दू अर्थक विवेचन
समन्वय	harmonious convergence	उपनिषद्-वाक्यसभक तात्पर्य-एकता
उपक्रम-उपसंहार	beginning-conclusion	तात्पर्यनिर्णायक संकेतक एक जोड़ी
तात्पर्यलिङ्ग	indicators of purport	अर्थनिर्णायक सन्दर्भीय साधन
कूटस्थनित्य	absolutely unchanging	पूर्ण अपरिवर्तनशील नित्यता
उत्पाद्य	produced	क्रियासँ नव वस्तुक उत्पत्ति
विकार्य	modified	क्रियासँ वस्तुक परिवर्तन
संस्कार्य	refined / purified	क्रियासँ दोषनिवारण वा गुणसंस्कार
आप्य	attainable	साधनसँ बाहरसँ प्राप्त होमयवला

पर्युदास	exclusionary negation	निषेधक विशिष्ट भाषिक पद्धति
निषेध	prohibition / negation	प्रसङ्गानुसार निषेध वा अनुपस्थितिक बोध
गौणार्थ	figurative meaning	मुख्यार्थसँ भिन्न सम्बन्धित अर्थ
मिथ्याबोध	erroneous cognition	बाधित होमयवला आत्म-आदि विषयक निर्णय
जीवन्मुक्ति	liberation while alive	देह-व्यवहार रहितहुँ अज्ञान-निवृत्तिक स्थापना
चतुःसूत्री	opening four sutras	ब्रह्मसूत्रक पहिल चारि सूत्रक शास्त्रीय अध्ययन
विवरण-प्रस्थान	Vivaraṇa school	अद्वैत टीकाक दोसर ऐतिहासिक व्याख्याधारा
भामती-प्रस्थान	Bhāmatī school	वाचस्पतिक टीकासँ जुड़ल व्याख्याधारा

समीक्षा-निष्कर्षक सारणी

1. आत्मजिज्ञासाक आवश्यकता

मुख्य उपलब्धि : 'हम'क व्यवहारिक परिचय निरुपाधिक आत्मज्ञानक समान नहि

समीक्षाक सीमा : आत्मानुभूतिक दोसर स्तर मानबाक शर्त

2. अध्यासलक्षण

मुख्य उपलब्धि : पूर्वदृष्ट, स्मृतिसदृश आ परत्रक विवेचन

समीक्षाक सीमा : प्रत्यभिज्ञाक साधारण उदाहरणसँ अतिव्याप्ति टारब

3. ख्यातिवाद

मुख्य उपलब्धि : विरोधी मतक तुलनासँ अनिर्वचनीयताक स्थापना

समीक्षाक सीमा : अनिर्वचनीयकेँ अस्पष्टताक नाम नहि बनाबब

4. स्वयंप्रकाशता

मुख्य उपलब्धि : अनवस्था-दोषक विकल्प रूपेँ आत्मसाक्षित्व

समीक्षाक सीमा : ज्ञानक सत्यता आ अनुभूतिक आत्मसाक्षित्व अलग

5. ब्रह्मजिज्ञासा

मुख्य उपलब्धि : अथ, अतः आ समास-विवेचन

समीक्षाक सीमा : कर्मज्ञान आ ब्रह्मज्ञानक भिन्न लक्ष्य

6. जन्माद्यस्य यतः

मुख्य उपलब्धि : जगत्-कारण सम्बन्धसँ तटस्थलक्षण

समीक्षाक सीमा : मानव-निर्माण दृष्टान्तसँ विश्व-कारण सिद्धि प्रश्नास्पद

7. शास्त्रयोनित्व

मुख्य उपलब्धि : समासद्वैध आ शास्त्रप्रामाण्य

समीक्षाक सीमा : आस्था आ ज्ञानक प्रमाण अलग

8. समन्वयाधिकरण

मुख्य उपलब्धि : विधि बनाम सिद्धवस्तुवाक्य

समीक्षाक सीमा : तात्पर्यलिङ्गक स्वतंत्र परीक्षण

9. मोक्ष

मुख्य उपलब्धि : चारि कार्यताक नकार

समीक्षाक सीमा : ज्ञानजन्य निवारण आ वस्तुजन्य उत्पत्ति भिन्न

10. भाषा

मुख्य उपलब्धि : देशज बिम्बसहित सूक्ष्म पारिभाषिकता

समीक्षाक सीमा : दीर्घ वाक्य आ वक्ता-परिवर्तनक अतिरिक्त सम्पादकीय स्पष्टता

11. द्विभाषिक पाठ

मुख्य उपलब्धि : मुख्य तेसर अध्यायक अनुच्छेद क्रम मेल

समीक्षाक सीमा : संस्कृत मूलसँ निष्ठाक स्वतंत्र परीक्षण शेष

12. ग्रन्थसूची

मुख्य उपलब्धि : विभागवार मुद्रित ग्रन्थसभक उपयोगी संकलन

समीक्षाक सीमा : अनिश्चित विवरण अलग चिह्नित राखब

ग्रन्थसूची : पुस्तक मात्र

निम्न विवरण मूल समीक्षित पुस्तकक ग्रन्थसूचीसँ चयनित अछि। ई बाहरी कैटलॉग-सत्यापनक दावा नहि; वेबसाइट, अनिश्रित प्रकाशन-विवरण आ जाँच-प्रतीक्षारत अपूर्ण प्रविष्टि शामिल नहि।

१. मिश्र, वाचस्पति। भामती (चतुःसूत्री): शंकरक ब्रह्मसूत्रभाष्यपर टीका। मूल संस्कृतसँ शुद्ध मैथिली अनुवाद, सम्पादन आ पुस्तक-विन्यास: गजेन्द्र ठाकुर। विदेह — प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका, प्रथम संस्करण २००४; परिवर्धित आ ऑडिट-संशोधित संस्करण २०२६। ISSN 2229-547X।

३. शंकराचार्य। ब्रह्मसूत्र-शाङ्करभाष्य: रत्नप्रभा, भामती आ न्यायनिर्णयसहित। सम्पा. महादेव शास्त्री बाकरे आ वासुदेव लक्ष्मण शास्त्री पणशीकर। तृतीय संस्करण। बम्बई: पाण्डुरङ्ग जावजी, १९३४।

४. शंकराचार्य। ब्रह्मसूत्रभाष्य। अङ्ग्रेजी अनु. स्वामी गम्भीरानन्द। कलकत्ता: अद्वैत आश्रम, १९६५; तृतीय संस्करण १९७७।

५. शंकराचार्य। द वेदान्त-सूत्रस, शाङ्करभाष्यसहित। अङ्ग्रेजी अनु. जॉर्ज थिबो। सेक्रेड बुक्स ऑफ द ईस्ट, खण्ड ३४ आ ३८। ऑक्सफोर्ड: क्लैरेण्डन प्रेस, १८९० आ १८९६; बादक भारतीय पुनर्मुद्रण उपलब्ध।

८. मिश्र, वाचस्पति। भामती। सम्पा. बालशास्त्री। बिब्लियोथेका इंडिका शृङ्खला। कलकत्ता: एशियाटिक सोसाइटी ऑफ बंगाल; मुद्रण: बनारस प्रिन्टिङ्ग प्रेस, १८७६-१८८०। आठ फासिकल, लगभग ७६६ पृष्ठ।

१०. मिश्र, वाचस्पति। भामती। सम्पा. दुण्डिराज शास्त्री। काशी संस्कृत सीरीज, सं. ११६। बनारस: जयकृष्णदास-हरिदास गुप्त, १९३५।

१५. मिश्र, वाचस्पति। द भामती ऑफ वाचस्पति ऑन शंकराज ब्रह्मसूत्रभाष्य (चतुःसूत्री)।

सम्पा. आ अङ्ग्रेजी अनु. एस. एस. सूर्यनारायण शास्त्री आ सी. कुन्हन राजा; भूमिका: सर्वपल्ली राधाकृष्णन। अड्यार लाइब्रेरी जनरल सीरीज, खं. १२। अड्यार, मद्रास:

थियोसोफिकल सोसाइटी, १९३३; पुनर्मुद्रण: अड्यार लाइब्रेरी एण्ड रिसर्च सेंटर, १९९२। ISBN 9788185141091।

१७. अमलानन्द सरस्वती। वेदान्तकल्पतरु। सम्पा. रामशास्त्री तैलङ्ग। विजयनगर संस्कृत सीरीज, सं. १३। बनारस: ई. जे. लाजरस एण्ड कम्पनी, १८९५-१८९७। दुइ खण्ड।

१८. अप्पय दीक्षित। वेदान्तकल्पतरुपरिमल। सम्पा. रामशास्त्री तैलङ्ग। मूल मुद्रण उन्नैसम शताब्दीक अन्त; पुनर्मुद्रण: दिल्ली, भारतीय विद्या प्रकाशन, १९९२। तीन भाग।

२०. पद्मपादाचार्य आ प्रकाशात्मयति। पञ्चपादिका तथा पञ्चपादिकाविवरण। सम्पा. पोलकम श्रीराम शास्त्री आ एस. आर. कृष्णमूर्ति शास्त्री। मद्रास: गवर्नमेन्ट ओरिएण्टल मैनुस्क्रिप्ट्स लाइब्रेरी, १९५८।

२२. मिश्र, वाचस्पति। न्यायवार्तिकतात्पर्यटीका। सम्पा. गङ्गाधर शास्त्री तैलङ्ग। बनारस: ई. जे. लाजरस, १८९३।

२४. मिश्र, वाचस्पति। सांख्यतत्त्वकौमुदी। संस्कृत पाठ आ अङ्ग्रेजी अनु. गङ्गानाथ झा। बम्बई: थियोसोफिकल पब्लिकेशन फण्ड, १८९६।

२८. हसुरकर, एस. एस. वाचस्पति मिश्र ऑन अद्वैत वेदान्त। दरभङ्गा: मिथिला इन्स्टिट्यूट ऑफ पोस्ट-ग्रेजुएट स्टडीज एण्ड रिसर्च इन संस्कृत लर्निङ्ग, १९५८। मिथिलाविद्यापीठग्रन्थमाला, सं. ३; स्टडीज इन इङ्गलिश, सं. २। xxx + २६७ पृष्ठ।

२९. झा, सहदेव। वाचस्पति मिश्र। पटना: मैथिली अकादमी, १९८४। मैथिली अकादमी प्रकाशन, सं. १३२। १५४ पृष्ठ।

३०. दुबे, राजेन्द्र प्रसाद। वाचस्पति मिश्र। नई दिल्ली: साहित्य अकादेमी, १९९८। ११९ पृष्ठ। ISBN 8126003111।

३३. रूदुरमुन, पी. एस. भामती एण्ड विवरण स्कूल्स ऑफ अद्वैत वेदान्त: ए क्रिटिकल अप्रोच। दिल्ली: मोतीलाल बनारसीदास, २००२। ३१४ पृष्ठ। ISBN 9788120818903।

३४. वसन्ता, एम. अद्वैतवेदान्ते भामतीप्रस्थानस्य तुलनात्मकम् अध्ययनम्। दिल्ली: नाग पब्लिशर्स, २०१३। xxvi + ४९३ पृष्ठ। ISBN 8170816882।

३६. पॉटर, कार्ल एच. (सम्पा.)। द एन्साइक्लोपीडिया ऑफ इण्डियन फिलॉसफीज, खण्ड ३: अद्वैत वेदान्त अप टू शंकर एण्ड हिज प्यूपिल्स। प्रिन्सटन/दिल्ली: प्रिन्सटन यूनिवर्सिटी प्रेस, अमेरिकन इन्स्टिट्यूट ऑफ इण्डियन स्टडीज आ मोतीलाल बनारसीदास, १९८१। x + ६३५ पृष्ठ।
३८. नकामुरा, हाजिमे। ए हिस्ट्री ऑफ अर्ली वेदान्त फिलॉसफी, खण्ड २। दिल्ली: मोतीलाल बनारसीदास, १९८३; पुनर्मुद्रण २००४।
४०. डॉइच, इलियट। अद्वैत वेदान्त: ए फिलॉसफिकल रिकन्स्ट्रक्शन। होनोलूलू: ईस्ट-वेस्ट सेंटर प्रेस/यूनिवर्सिटी ऑफ हवाई प्रेस, १९६९।
४२. गुप्ता, बीना। द डिसइन्टरेस्टेड विटनेस: ए फ्रैगमेण्ट ऑफ अद्वैत वेदान्त फेनोमेनोलॉजी। एवन्स्टन: नॉर्थवेस्टर्न यूनिवर्सिटी प्रेस, १९९८। २३६ पृष्ठ।
४४. दासगुप्त, सुरेन्द्रनाथ। ए हिस्ट्री ऑफ इण्डियन फिलॉसफी, खण्ड १-२। कैम्ब्रिज: कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस, १९२२ आ १९३२।
४६. इसायवा, नतालिया। शंकर एण्ड इण्डियन फिलॉसफी। अल्बानी: स्टेट यूनिवर्सिटी ऑफ न्यूयॉर्क प्रेस, १९९३।
५०. ओलिवेल, पैट्रिक (सम्पा. आ अनु.)। द अर्ली उपनिषद्स: एनोटेटेड टेक्स्ट एण्ड ट्रान्सलेशन। ऑक्सफोर्ड: ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, १९९८।

भामती

अध्यास, आत्मबोध आ मोक्षक विवेक

वाचस्पति मिश्रक भामतीमे शंकरक
ब्रह्मसूत्रभाष्यक चतुःसूत्रीपर गम्भीर
तर्क आ पूर्वपक्ष-सिद्धान्तक विवेचन अछि।

एहि समीक्षामे अध्यास, आत्माक
स्वयंप्रकाशता, अनिर्वचनीयख्याति,
वेदप्रामाण्य आ मोक्षक परीक्षा अछि।

मूल मैथिली आ अंग्रेजी पाठक तुलना,
स्रोत-साक्ष्य, भाषिक विवेचन आ
शोध-ग्रन्थसूची सेहो सम्मिलित अछि।

शास्त्रीय टीकाकार वाचस्पति मिश्र
आ मैथिली अनुवादक गजेन्द्र ठाकुरक
अलग-अलग बौद्धिक भूमिका सुरक्षित अछि।

विदेह — प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका

सम्पादक आ समीक्षक : आशीष अनचिन्हार



VIDEHA.CO.IN



VIDEHA GITHUB

विस्तृत ग्रन्थ-समीक्षा — खण्ड २९

www.videha.co.in